खनिज नीतियाँ

सामान्य खनिज नीतियाँ	मार्बल व ग्रेनाइट नीति	M-सैंड नीति-2020
1st — 1978	↓ 2002	↓ 25 Jan. 2021
2nd — 1990		
3rd — 1994		
4th — 2011		
5th — 4 जून 2015		
6th — Update		

M- Sand Policy— 2020

अर्थ→ M- Sand कृत्रिम बजरी है।
(Manufacture Sand)

जिसे पत्थरों या खनिज को पीसकर तैयार किया जाता है।

→ M- सैंड नीति राजस्थान में 25 जनवरी 2021 को जारी की गई।
जिसके मुख्य उद्देश्य—

1.) यह बजरी का सस्ता एवं आसान विकल्प है।

2.) पर्यावरण संरक्षण

3.) परिस्थितिकी तंत्र में सुधार करना।

> सरकारी कार्यों में 25% M-SAND अनिवार्य

4.) खनिज आधारित उद्योगों को बढ़ाना तथा स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर बढ़ाना।

Springboard ACADEMY

5.) खनन क्षेत्रों से निकलने वाले अपशिष्ट (बारीक पत्थर) का उचित समाधान।

खनिज संबंधी संस्थान-

1. RSMML [Rajasthan State Mines And Minerals Limited]
(राजस्थान राज्य खान एवं खनिज निगम)
- स्थापना - 1974
- मुख्यालय - उदयपुर

2. **हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड-**
- स्थापना - 1966, देबारी (उदयपुर)
राजपुरा दरीबा (राजसमंद - 2010)

NOTE- जिंक स्मेल्टर प्लांट -
- स्थिति - चंदेरिया (चित्तौड़)
- स्थापना - 2005
- सहयोग - ब्रिटेन

3. **हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेड-**
- स्थापना - 1967,
- स्थान - खेतड़ी (नीम का थाना)

4. **हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेड की ताम्र परियोजनाएँ-**

1.) खेतड़ी (नीम का थाना)
2.) चान्दमारी (झुन्झुनूं)
3.) खो - दरीबा (अलवर)

4. पेट्रोलियम रिफाइनरी-

- स्थिति - पचपदरा (बालोतरा)
- सहयोग - केन्द्र : राज्य = 74 (HPCL) : 26 (राजस्थान सरकार)
  - HPCL (हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड)
- बजट - 72,937 करोड़ ₹
- क्षमता - 9 MMTPA (मिलियन मैट्रिक टन प्रति वर्ष)

विशेषताएँ-

1.) पेट्रोलियम रिफाइनरी राज्य की प्रथम एवं देश की 26 वीं पेट्रोलियम रिफाइनरी है।

2.) इस रिफाइनरी का BS (Bharat stage) मानक 6 है।

3.) पेट्रोलियम रिफाइनरी के निकट Petro Chemical Complex स्थापित। किया जायेगा। (शुभारंभ – 16 जनवरी 2018)

Springboard Academy

वनस्पति

A. वन नीतियाँ
B. वन गणना
C. वनों का वर्गीकरण
D. प्रमुख वन सम्पदा एवं घास
E. वानिकी कार्यक्रम
F. वानिकी व पर्यावरण संबंधी पुरस्कार
G. प्रमुख अधिनियम एवं परियोजनाएँ
H. वानिकी व पर्यावरण संबंधी दिवस
I. अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु / तथ्य

वन नीतियाँ

भारत सरकार

- 1894
- 1952
- 1988
  - उद्देश्य
    - भौगोलिक क्षेत्र 33%
    - पर्वत 60%
    - मैदान 20%

राज्य सरकार

- 1^{st} – 18 Feb. 2010
- 2^{nd} – 5 June 2023
  - भौगोलिक क्षेत्र
    - 20%
- देश में प्रथम राज्य वन नीति राजस्थान द्वारा जारी की गई

वनगणना

- **संस्थान** - वन सर्वेक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, देहरादून (उत्तराखण्ड)
- **समय** - प्रति दो वर्ष में एक बार
  - प्रथम वनगणना = 1987
  - 2007 मे वनगणना जारी नहीं हुई।

नवीनतम - 2021 (17 वीं)

Springboard ACADEMY

17 वीं वनगणना-२०२१ (ISFR) के अनुसार-

[ISFR= Indian State forest Report]

राजस्थान में कुल वन (२०२१)

- 7.43%
  - वनाच्छादित (FC) (Forest Covered) — 4.87%
  - वृक्षाच्छादित (TC) (Tree covered) — 2.56%
- 25388 Km²
  - FC — 16655 Km
  - TC — 8733 Km²

NOTE-

वन
- 10% से अधिक → वनाच्छादित
- 10% से कम → वृक्षाच्छादित

*17 वीं वनगणना २०२१ के अनुसार सर्वाधिक वन-

क्षेत्रफल		प्रतिशत (%)	
1. उदयपुर	2753 Km²	1. उदयपुर	23.49%
2. अलवर	1196 Km²	2. प्रतापगढ़	23.24%
3. प्रतापगढ़	1034 Km²	3. सिरोही	17.49%
4. बारां	1010 Km²	4. करौली	15.28%

*17 वीं वनगणना २०२१ के अनुसार न्यूनतम वन-

क्षेत्रफल		प्रतिशत (%)	
चुरू	78 Km²	जोधपुर	0.48%
हनुमानगढ़	93 Km²	चुरू	0.56%
जोधपुर	109 Km²	जैसलमेर	0.84%
श्रीगंगानगर	115 Km²	बीकानेर	0.92%

Springboard Academy

NOTE- राजस्थान में अभिलेखित वन-

प्रतिशत → 9.61 %

क्षेत्रफल →
32864 $(कि.मी)^2$ = 2021-22
32869 $(कि.मी)^2$ = 2022-23
32921 $(कि.मी)^2$ = 2023-24

* ISFR-2023 Report (18 वीं वनगणना) -

→ Report आने के बाद स्वयं करंट से Update करें।
Website- 'Forest Survey of india.'

Springboard ACADEMY

वनों का वर्गीकरण

- कानूनी / प्रशासनिक वर्गीकरण
- भौगोलिक वर्गीकरण

1. कानूनी / प्रशासनिक वर्गीकरण-

राज्य वन अधिनियम 1953 के अनुसार इन वनों को तीन भागों में बाँटा गया है-

आरक्षित वन	संरक्षित / रक्षित वन	अवर्गीकृत वन
लकड़ी काटना, पशुचारण एवं शिकार पर पूर्णतः प्रतिबंध	लकड़ी काटना, पशुचारण की सीमित छूट	कोई प्रतिबंध नहीं
सर्वाधिक - उदयपुर 36.99%	बारां 56.51%	बीकानेर 6.50%

2. भौगोलिक वर्गीकरण-

राजस्थान में भौगोलिक वनों का वर्गीकरण सामान्यतः 5 भागों में किया जाता है।

- इस वर्गीकरण का मुख्य आधार = वर्षा, तापमान व उच्चावच है।

- उपोष्ण सदाबहार वन
- उष्ण सागवान वन
- उष्ण शुष्क मानसूनी वन
- उष्ण धोक वन
- उष्ण मरुद्भिद वन

उष्ण मरुद्भिद वन- 6%

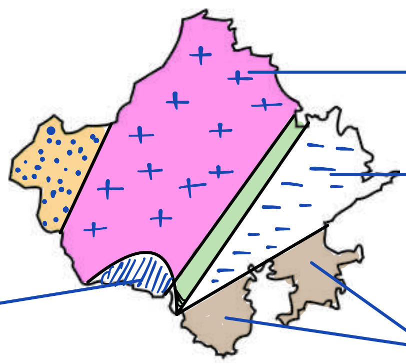

उष्ण धोक वन - 58%

शुष्क मानसूनी वन 28%

उपोष्ण सदाबहार वन 1%

उष्ण सागवान वन 7%

Springboard ACADEMY

1. उपोष्ण सदाबहार वन/ उपोष्ण पर्वतीय वन-

- वर्षा- इन वनों में वर्षा की आवश्यकता 150 cm है।
- क्षेत्र॰ - इन वनों का योगदान राजस्थान के कुल भौगोलिक वनों का 1% है।
- विस्तार- मुख्यत: माउंट आबू (सिरोही) में
- वृक्ष/ घास- डिक्लिपटेरा आबू एंसिस/ अम्बरतरी
  बाँस
  जामुन
- महत्व/ विशेषता- इन वनों में जैव विविधता अधिक पाई जाती है।

2. उष्ण सागवान वन-

- वर्षा- इन वनों में वर्षा की आवश्यकता 75-110 cm होती है।
- क्षेत्र - इन वनों का योगदान राजस्थान के कुल भौगोलिक वनों का 7% है।
- विस्तार- यह वन मुख्यत: वागड़ (डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़) व हाड़ौती (कोटा, बारां, झालावाड़) क्षेत्र में पाए जाते है।
- वृक्ष - सागवान, गूलर, महुआ, तेंदु (SGMT)
- महत्व- यह वन औद्योगिक क्षेत्र में अधिक उपयोगी है।

3. उष्ण शुष्क मानसूनी / पतझड़ वन-

- वर्षा- इन वनों में वर्षा की आवश्यकता 50-80 cm होती है।
- क्षे॰ - कुल भौगोलिक वनों का 28% हिस्सा।

- **विस्तार-** मेवाड़ क्षेत्र व मैदानी क्षेत्र (अलवर, भरतपुर, करौली, धौलपुर)
  → राजसमन्द, उदयपुर, भीलवाड़ा, चित्तौड़
- **वृक्ष** – साल, सागवान, शीशम, रोजवुड, खैर, पलाश, आम, चंदन
- **विशेषता-** फर्नीचर उद्योग में सर्वाधिक उपयोग।

NOTE- रोहिड़े को राजस्थान में मरु सागवान (मरुटीक) कहा जाता है।

4. उष्ण धोक वन–

- **वर्षा-** इन वनों में वर्षा की आवश्यकता 30-60 cm होती है।
- **क्षेत्र-** कुल भौगोलिक वनों का 58% भाग।
- **विस्तार-** अर्द्धशुष्क मरुस्थल, अरावली क्षेत्र, स. माधोपुर, करौली
- **वृक्ष** - खेजड़ी, रोहिड़ा, बबूल, कैर, बेर, धोक
- **महत्व** - यह वन ईंधन की लकड़ी के रूप में उपयोगी है।

5. उष्ण कंटीले वन / मरुद्भिद वन / जीरोफाइट्स वन-

- **वर्षा-** इन वनों में वर्षा की आवश्यकता 0-30 cm होती है।
- **क्षेत्र-** कुल भौगोलिक वनों का 6% है।
- **विस्तार-** जैसलमेर, बीकानेर, बाड़मेर, जोधपुर
- **वृक्ष** - कंटीली झाड़ियाँ, कैक्टस, डंडा थोर
- **महत्व** - यह वन मरुस्थलीकरण को रोकते है।

Springboard ACADEMY

▷ प्रमुख वन सम्पदा एवं घास

1. **खेजड़ी** → (प्रोसोपिस सिनेरेरिया)

- सर्वाधिक पश्चिमी राजस्थान में (सर्वाधिक - जोधपुर)
- अन्य नाम - राज्य वृक्ष (1983 ई.) / राज्य का गौरव / शमी वृक्ष / राज्य का कल्पवृक्ष / जांटी (स्थानीय भाषा में)

> NOTE - • विजयादशमी / दशहरा के अवसर पर खेजड़ी की पूजा की जाती है।
> • गोगाजी के थान / मन्दिर खेजड़ी के नीचे स्थापित किए जाते है।

2. **रोहिड़ा** → (टीकोमेला अंडूलेटा)

- सर्वाधिक पश्चिमी राजस्थान में (सर्वाधिक - जोधपुर)
- अन्य नाम - राज्य पुष्प (1983 ई.) "मरुस्थल का सागवान" → फर्नीचर बनाने में उपयोगी

3. **महुआ** → (मधुका लोंगिफोलिया)

- सर्वाधिक - डूँगरपुर
- "आदिवासियों का कल्पवृक्ष"
- उपयोग - शराब बनाने में (फूलों से), औषधि बनाने में (छाल से)

4. **पलाश / ढाक / खाखरा** → (ब्युटिया मोनोस्पर्मा)

- सर्वाधिक अरावली क्षेत्र में - राजसमंद, अजमेर एवं अलवर
- इसे 'जंगल की ज्वाला' कहते है।
- इसके फूलों से 'प्राकृतिक रंग' बनाया जाता है।

5. **डिक्लिप्टेरा आबू ऐंसिस (अम्बरतरी)** - यह एक औषधीय पादप है जो विश्व में केवल माउंट आबू में पाया जाता है।

6. खैर →

- सर्वाधिक - उदयपुर, चित्तौड़गढ़
- कथौड़ी जनजाति द्वारा इस वृक्ष की छाल से 'कत्था' तैयार किया जाता है।

7. शहतूत →

- सर्वाधिक - उदयपुर
- इस वृक्ष पर रेशमकीट से रेशम उत्पादित किया जाता है।
  - "रेशमकीट पालन - सेरीकल्चर"

8. तेंदू →

- सर्वाधिक - प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़ एवं हाड़ौती
- इसकी पत्तियों का उपयोग बीड़ी बनाने में किया जाता है।
- 'टिमरू' → तेंदू फल को 'टिमरू' कहा जाता है।
- 1974 में तेंदू पेड़ का राष्ट्रीयकरण किया गया।

9. जामुन -

- सर्वाधिक - माउंट आबू, सिरोही, अजमेर
- मधुमेह के उपचार में उपयोगी

10. सागवान - (वैज्ञानिक नाम - टिकटोना ग्रैंडिस)

- सर्वाधिक - बांसवाड़ा
- इसकी लकड़ी का उपयोग मुख्यतः फर्नीचर बनाने में किया जाता है।

11. साल / सालर - मुख्यतः अरावली क्षेत्र (अलवर, अजमेर, राजसमंद एवं सिरोही) में पाया जाता है।

इन वनों का विस्तार 450 मीटर से अधिक ऊँचाई वाले क्षेत्रों में होता है।

प्रमुख घास-

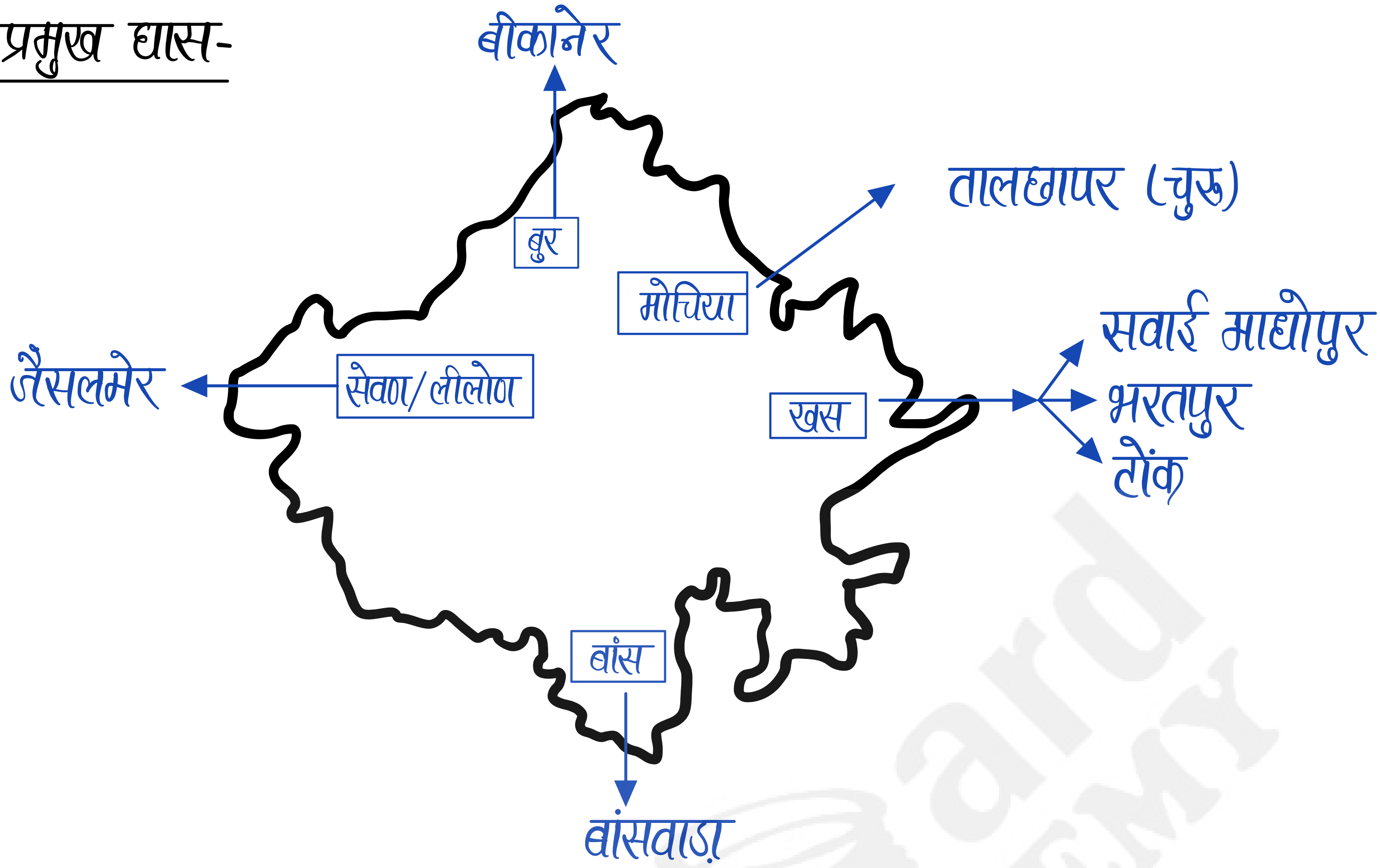

(i) सेवण/लीलोण-

- वैज्ञानिक नाम- लेसियुरस सिंडिकस
- सर्वाधिक -जैसलमेर (लाठी सीरीज क्षेत्र में)
- दुधारु पशुओं के चारे के रूप में उपयोगी।
- इसे गोडावण की शरणस्थली भी कहा जाता है।

(ii) धामण →

वैज्ञानिक नाम– सेन्क्रस सेटीजेरस

सर्वाधिक –जैसलमेर

दुधारु पशुओं के चारे के रूप में उपयोगी।

(iii) बांस →

वैज्ञानिक नाम- बम्बुसा वल्गरिस

सर्वाधिक- बांसवाड़ा

Springboard ACADEMY

यह सर्वाधिक लम्बी घास होती है जिसे "आदिवासियों का हरा सोना"/ "आदिवासियों की ईमारती लकड़ी" कहा जाता है।

(iv) **खस** →

सर्वाधिक - सवाई माधोपुर, भरतपुर, अजमेर एवं टोंक

यह सुगंधित घास है जो शरबत बनाने एवं इत्र बनाने में उपयोगी होती है।

(v) **बुर** →

सर्वाधिक - बीकानेर

यह सुगंधित घास है।

राजस्थान में अन्य घासें-
अंजन, करड, भरूट

(vi) **मोचिया घास** →

सर्वाधिक - चुरु (तालछापर अभ्यारण्य)

E. वृक्षारोपण कार्यक्रम

1. मरुस्थल वृक्षारोपण कार्यक्रम →

- शुरुआत- 1977-78
- जिले - 10
- वित्तीय भागिदारी - केन्द्र : राज्य = 75 : 25

NOTE :- मरुस्थल विकास कार्यक्रम (DDP)
- शुरु 1977-78
- जिले - 16
- वित्तीय सहयोग - केन्द्र : राज्य - 75 : 25

2. ऑपरेशन खेजड़ी →

- शुरुआत- 1991
- उद्देश्य - मरुस्थलीकरण को रोकना।

3. अरावली वृक्षारोपण योजना - (सहयोग - जापान)

- शुरुआत- 1992 (8 वर्ष, 1992-2000)

Springboard Academy

- 10 जिले शामिल – अलवर, जयपुर, सीकर, झुंझुनूं, नागौर, पाली
  सिरोही, उदयपुर, चित्तौड़ एवं बांसवाड़ा।

4. राज्य वानिकी क्रियान्वयन योजना-

- 1996 से 2016 (20 वर्षीय कार्यक्रम)
- उद्देश्य - राज्य में वानिकी को बढ़ावा।

5. राज्य वानिकी एवं जैव विविधता कार्यक्रम-

- शुरुआत - 2003
- उद्देश्य – • वनों एवं जैव विविधता को बढ़ाना।
  • मिट्टी एवं भू–जल संरक्षण
  • गरीबी उन्मूलन एवं आजीविका कार्यक्रम

चरण

फेज- Ist (2003-10)	फेज- IInd (2011-22)	फेज- IIIrd (2023) (Next - 8 year)
18 जिले	15 जिले (10 मरुस्थलीय + 5 गैर मरुस्थलीय)	13 जिले → वित्त = 70% : 30% (फ्रांस : राज्य)
सहयोग - JICA (जापान)	JICA (जापान)	फ्रैंच डेवलपमेंट एजेंसी (फ्रांस)

JICA → Japan International Cooperation Agency

नोट :- फेज-IInd के गैर-मरुस्थलीय जिलों में जयपुर, सिरोही, बाँसवाड़ा, डूँगरपुर एवं भीलवाड़ा शामिल थे।

Springboard ACADEMY

6. हरित राजस्थान कार्यक्रम- (2009-2014)

→ यह वृक्षारोपण की एक पंचवर्षीय योजना है।

7. वन धन योजना- (राज्य सरकार)

→ 12 Aug.,2015 से शुरू।

→ उद्देश्य- वन क्षेत्रों के निकट रहने वाले लोगों के विकास एवं उनकी वनों पर निर्भरता कम करने व रोजगार उपलब्ध करवाना।

8. वन धन विकास योजना (केन्द्र सरकार) →

→ शुरुआत- 14 अप्रैल,2018

→ उद्देश्य- गैर लकड़ी आधारित उत्पादों द्वारा आदिवासियों की आय बढ़ाना।

9. घर- घर औषधि योजना-

→ शुरुआत- 1 अगस्त 2021 (2021 से 2026)

→ उद्देश्य- • रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाना।
• औषधीय पादपों को बढ़ाना।

Note- इस योजना में 4 पादपों को शामिल किया गया है-
तुलसी, अश्वगंधा, कालमेघ, गिलोय

Springboard Academy

F. वन संरक्षण पुरस्कार

1. अमृता देवी बिश्नोई पुरस्कार- प्रारम्भ- 1995

उद्देश्य- • वृक्षारोपण • वन संरक्षण • वन्य जीव संरक्षण

यह पुरस्कार तीन स्तर पर दिया जाता है

व्यक्तिगत वन संरक्षण
राशि- 50 हजार
1. ओम सिंह राजावत (2018 में)
2. नारायण लाल कुमावत (2019)
3. श्याम सुन्दर पालीवाल (2020)
4. अभिलाषा एवं बच्चू सिंह वर्मा (2021)
5. पवन कुमार जैन (2022)

व्यक्तिगत वन्य जीव संरक्षण
राशि- 50 हजार
1. सतनाम सिंह (2018 में)
2. गजेन्द्र सिंह मांझी (2020)
3. पद्म सिंह राठौड़ (2021)
4. मोहित शर्मा एवं दिव्या शर्मा (2022)

संस्थागत वन सुरक्षा एवं प्रबन्धन
राशि- 1 लाख
(i) वंडर सीमेंट कम्पनी R.K नगर, चित्तौड़ (2018 में)
(ii) मानव सेवा संस्थान, हनुमानगढ़ (2018 में)
(iii) वन सुरक्षा एवं प्रबंधन समिति, पाटिया- उदयपुर (2018 में)
(iv) वन सुरक्षा एवं प्रबंधन समिति, सती की चोरी- उदयपुर (2020)

2. इंदिरा प्रियदर्शिनी वृक्ष मित्र पुरस्कार- (शुरुआत- 1986)

यह पुरस्कार भारत सरकार के पर्यावरण और वन मंत्रालय द्वारा उन व्यक्तियों और संस्थानों को दिया जाता है, जिन्होंने वनीकरण और बंजर भूमि विकास के क्षेत्र में असाधारण और अनुकरणीय कार्य किया है।

राशि- 2,50,000 रु.

3. राजीव गांधी पर्यावरण संरक्षण पुरस्कार- शुरुआत- 2012 (5 जून)

यह पुरस्कार तीन स्तर पर दिया जाता है

व्यक्तिगत	नगरीय निकाय	संस्थागत
राशि- 2 लाख + रजत कमल	3 लाख + रजत कमल	5 लाख + रजत कमल

4. कैलाश सांखला वन्यजीव संरक्षण पुरस्कार- (शुरुआत-2010)

राशि- 50,000 रुपये (वन्य जीवों की सुरक्षा हेतु)

5. वनपालक पुरस्कार-

यह पुरस्कार सरकारी विभाग में कार्य करने वाले वन रक्षक और वन विभाग के कर्मचारियों को दिया जाता है।

7. वनस्पति एवं वन्य जीवों के संरक्षण संबंधी अधिनियम एवं परियोजनाएँ

- वन्य जीव संरक्षण अधिनियम - 1972
- बाघ संरक्षण परियोजना - 1973
- मगरमच्छ संरक्षण परियोजना - 1975
- वन संरक्षण अधिनियम - 1980 (संशोधित -1988)
- पर्यावरण संरक्षण अधिनियम - 1986
- हाथी संरक्षण परियोजना - 1992
- जैव विविधता संरक्षण अधिनियम - 2002 (नियम - 2010)
- डॉल्फिन संरक्षण अधिनियम - 2009

Springboard ACADEMY

→ गांगेय डॉल्फिन को राष्ट्रीय जलीय जीव का दर्जा २०10 में दिया गया।

H. प्रमुख दिवस

- 14 जनवरी, 31 जनवरी → जीव जंतु पखवाड़ा
- २ फरवरी → रामसर/ विश्व आर्द्रभूमि दिवस
- २1 मार्च → विश्व वानिकी दिवस
- २२ मार्च → जल दिवस
- २२ अप्रैल → पृथ्वी दिवस
- २२ मई → जैव विविधता दिवस
- 5 जून → विश्व पर्यावरण दिवस
- 1 जुलाई- 7 जुलाई → वन महोत्सव एवं वन सप्ताह

(राजस्थान में राज्य वन महोत्सव - १२ सितम्बर)

- 16 सितम्बर → ओजोन दिवस
- 1 अक्टूबर से 7 अक्टूबर → वन्य जीव सप्ताह

थीम - २०२४

- २ फरवरी → Wetlands and Human Wellbeing
- २1 मार्च → Forest and Innovation
- २२ मार्च → Water for Peace
- २२ अप्रैल → Planet v/s Plastics
- २२ मई → Build Back Biodiversity : From Agreement to action.

Springboard ACADEMY

- ➢ 5 जून → Land restoration, desertification and drought Resilience
- ➢ 16 सितम्बर → Ozone for Life

I. अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- वनों संबंधित संस्थान
- राजस्थान के प्रमुख बायो लॉजिकल पार्क
- राजस्थान के थीम पार्क

(a) वनों के संबंधित संस्थान –

1. **काजरी** (CAZRI – Central Arid Zone Research Institute) –
   - स्थापना – 1959, जोधपुर
   - 5 उपकेन्द्र – बीकानेर, जैसलमेर, पाली, भुज (कच्छ-गुजरात) व लेह (लद्दाख)

2. **आफरी** (AFRI – Arid forest Research Institute)
   - स्थापना – 1987, जोधपुर

3. **राजस्थान राज्य जैव विविधता बोर्ड** –
   - गठन 14 सितम्बर, 2010 (जयपुर)

(b) राजस्थान के प्रमुख बायो लॉजिकल पार्क (जैविक उद्यान) – (4)

1. सज्जनगढ़ → उदयपुर
2. माचिया सफारी → जोधपुर
3. नाहरगढ़ → जयपुर
4. अभेड़ा → कोटा (नांता)

NOTE – मरुधरा → बीकानेर (बीछवाल) – निर्माणाधीन

(C) राजस्थान के थीम पार्क-

1. प्रकृति पार्क → चुरु, लक्ष्मणगढ़ (सीकर)
2. कैक्टस गार्डन → कुलधरा (जैसलमेर)
3. बटरफ्लाई पार्क → उदयपुर (प्रस्तावित - अजमेर)
4. बोगनवेलिया थीम → उदयपुर एवं जयपुर
5. जैव विविधता पार्क → गमधर (उदयपुर)
6. किशनबाग जयपुर के धोरे → जयपुर
7. सिटी पार्क एवं फाउंटेन पार्क → जयपुर (मानसरोवर)
8. संविधान पार्क → जयपुर
9. ऑक्सीजन पार्क → कोटा

NOTE :-
* Monkey Vally of Rajasthan - गलता जी (जयपुर)
* बटरफ्लाई वैली - कुलिश स्मृति वन (जयपुर)

Springboard ACADEMY

राजस्थान में जैव विविधता एवं वन्य जीव संरक्षण

- ✓ पारिस्थितिकी तंत्र
- ✓ राजस्थान में पारिस्थितिकी समस्याएँ
- ✓ वन्यजीव / पारिस्थितिकी संरक्षण

पारिस्थितिकी तंत्र (100 words)

- राजस्थान राज्य को 4 पारिस्थितिकी तंत्रों में बाँटा गया है–
  1. मरु पारिस्थितिकी तंत्र
  2. अरावली पारिस्थितिकी तंत्र
  3. पूर्वी मैदान पारिस्थितिकी तंत्र
  4. हाड़ौती पारिस्थितिकी तंत्र

1. मरु पारिस्थितिकी तंत्र–

- उत्तर-पश्चिम राजस्थान में विस्तृत।
- वनस्पति- इस पारिस्थितिकी तंत्र में जीरोफाइट्स या मरुद्भिद/ कंटीली वनस्पति पाई जाती है।
  जैसे- कैक्टस, कंटीली झाड़ियाँ, डंडा थोर
- वन्यजीव→ मरु लोमड़ी, गोडावण, चिंकारा, कुरजा, छोटा किलकिला काला हिरण।
- विशेषता→ इस पारिस्थितिकी तंत्र में जैव विविधता कम पाई जाती है क्योंकि यहाँ वर्षा एवं वनस्पति सघनता कम होती है।

२. अरावली पारिस्थितिकी तंत्र-

- यह राजस्थान के दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर विस्तृत है।
- वनस्पति → उपोष्ण सदाबहार, उष्ण धोक, उष्ण शुष्क मानसूनी/ पतझड़
- वन्यजीव → कब्र बिज्जु (उदयपुर), जंगली मुर्गे, भेड़िये (राजसमंद), खड़मोर (अजमेर), चीतल (जयपुर), सांभर (अलवर), खरगोश (दौसा)

> NOTE- इस पारिस्थितिकी तंत्र में जैव विविधता सर्वाधिक पाई जाती है। क्योंकि यहाँ वनस्पति सघनता अधिक होती है।

3. पूर्वी मैदान पारिस्थितिकी तंत्र-

- यह पारिस्थितिकी अरावली के पूर्व में स्थित है।
- इस पारिस्थितिकी तंत्र में उष्ण शुष्क मानसूनी वनस्पति (पतझड़ वन) पाई जाती है, जैसे- साल, सागवान, शीशम, पलाश एवं खैर।
- वन्य जीव- इस पारिस्थितिकी तंत्र में पक्षी जैव विविधता अधिक पाई जाती है। जैसे-
  - जलपीपी - बांसवाड़ा
  - जांघिल - डूंगरपुर
  - सारस - भरतपुर
  - मोर - भीलवाड़ा
  - हंस - टोंक
  - इंडियन स्कीमर (पंछीडा) - धौलपुर

4. हाड़ौती पारिस्थितिकी तंत्र-

- यह पा० तंत्र राजस्थान के द० पू० क्षेत्र में स्थित है।
- इस पारिस्थितिकी तंत्र में उष्ण सागवान वन पाए जाते है।
- वनस्पति- सागवान, गूलर, महुआ, तेन्दु।

- वन्यजीव-

  इसमें जलीय जैव विविधता अधिक पाई जाती है।

  जैसे

  घड़ियाल (करौली), मगरमच्छ (बारां), गांगेय सूंस, उद्बिलाव (कोटा), सुर्खाब (बूंदी)

विशेषता- इस पारिस्थितिकी तंत्र में वर्षा सर्वाधिक होती है। इस कारण सतही जल की उपलब्धता अधिक होती है।

राजस्थान में पारिस्थितिकी की समस्याएँ/चुनौतियाँ

चुनौतियाँ- (50 words)

- राजस्थान में क्षेत्रफल की तुलना मे वन्य जीव कम पाए जाते है।
- जिसका कारण-

मानवीय कारण	जलवायु/ पर्यावरणीय कारण
1. बढ़ती हुई जनसंख्या एवं पशु सम्पदा।	1. राजस्थान में अल्प वर्षा का होना।
2. वनों एवं वृक्षों की कटाई।	2. सतही एवं भूमिगत जल की कम उपलब्धता
3. बढ़ता हुआ नगरीकरण एवं औद्योगिकरण।	3. प्राकृतिक वनस्पति की कमी।
4. मानव व वन्यजीवों के मध्य बढ़ते हुए आपसी संघर्ष।	4. बढ़ता हुआ मरुस्थलीकरण।
5. अरावली क्षेत्र में बढ़ता हुआ खनन।	5. वन्यजीवों के मध्य बढ़ते हुए आपसी संघर्ष।

वन्यजीव / पारिस्थितिकी संरक्षण

असम के बाद, राजस्थान वन्य जीवों में दूसरा स्थान रखता है। आजादी से राजस्थान को "शिकारियों के स्वर्ग" के रूप में जाना जाता था। आजादी के बाद, पेड़ों की अनियंत्रित कटाई और अवैध शिकार के कारण, केन्द्र और राज्य सरकार दोनों वन और वन्यजीव संरक्षण के लिए संयुक्त रूप से प्रयासरत है।

वन्य जीवों को दो तरीकों से संरक्षित किया जा सकता है-

वन्यजीव संरक्षण

स्वः स्थाने संरक्षण (In-Situ)	बाह्य स्थाने संरक्षण (Ex-Situ)
जीवों को उनके प्राकृतिक आवास में संरक्षित करना।	जीवों को उनके प्राकृतिक आवास के बाहर संरक्षित करना।
उदा. • राष्ट्रीय उद्यान • वन्यजीव अभयारण्य • बाघ संरक्षण परियोजना • रामसर साइट • कन्जर्वेशन रिजर्व • आखेट निषेध क्षेत्र एवं जैव मण्डल	उदा.- • जंतुआलय • मृग उद्यान • पशु जीन बैंक एवं एक्वेरियम

I. स्वः स्थाने संरक्षण-

➥ राष्ट्रीय उद्यान- राजस्थान में तीन राष्ट्रीय उद्यान है, जो निम्न लिखित है- (a) रणथम्भौर
(b) केवलादेव
(c) मुकुंदरा हिल्स राष्ट्रीय उद्यान

Springboard Academy

(a) रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान- (1980)

- सवाई माधोपुर (२८२.03 Km²)
- राजस्थान का प्रथम राष्ट्रीय उद्यान (बाघों का घर)
- राजस्थान की प्रथम बाघ परियोजना (प्रमुख बाघिन - मछली / T-16)
- त्रिनेत्र गणेश मन्दिर, जोगी महल एवं कुक्कुर घाटी (डॉग वैली) स्थित।
- धोक वृक्ष की अधिकता
- रणथम्भौर में स्थित तालाब- काला तालाब, जंगली तालाब, सुख तालाब

(b) केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान / घाना पक्षी विहार (1981)-

- भरतपुर, क्षेत्र० → (२8.73 Km²)
- यूनेस्को धरोहर सूची में शामिल राज्य की एकमात्र प्राकृतिक धरोहर (1985)
- शीत ऋतु में साइबेरियन सारस यहाँ आते है।
- इसे पक्षियों का स्वर्ग भी कहते है।
- 1981 में रामसर सूची में शामिल।
- डॉ. सलीम अली की कर्मस्थली
- अजान बाँध इसी अभयारण्य में स्थित है।
- इस राष्ट्रीय उद्यान में 'ऐंचा' घास अधिक पाई जाती है।

(c) मुकुंदरा हिल्स राष्ट्रीय उद्यान- (२०१२) (कोटा, चित्तौड़गढ़)

- राजस्थान का नवीनतम राष्ट्रीय उद्यान।
- राजस्थान का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्यान (२९7.62 वर्ग कि.मी.)
- गागरोनी तोते एवं बाघों के लिए प्रसिद्ध।

- राज्य की तीसरी बाघ परियोजना
- सागवान वनस्पति अधिक पाई जाती है।

NOTE:- मुकुन्दरा
- → राष्ट्रीय उद्यान-(कोटा-चित्तौड़)
- → हिल्स-(कोटा-झालावाड़)
- → बाघ परियोजना-(कोटा, बूँदी, झालावाड़, चित्तौड़)
- → दर्रा अभयारण्य-(कोटा, झालावाड़)

अभयारण्य

राज्य अभयारण्य-(२६)

सबसे बड़ा

1. राष्ट्रीय मरुउद्यान (3162 Km²)
2. कैलादेवी अभयारण्य (677 Km²)
3. कुम्भलगढ़ अभयारण्य (611 Km²)

सबसे छोटा

1. सरिस्का-अ (3 Km²)
2. सज्जनगढ़ अभयारण्य (5 Km²)
3. तालछापर अभयारण्य (7 Km²)

प्रमुख अभयारण्य

नाम	क्षेत्र	वर्ष	विशेषताएँ
रामसागर	धौलपुर	1955	
वन विहार	धौलपुर	1955	
केसरबाग	धौलपुर	1955	
सरिस्का-अ	अलवर	2012	राज. का सबसे छोटा अभयारण्य
सरिस्का	अलवर	1955	• राज. की दूसरी बाघ परियोजना (1978) • मोर व हरे कबूतर के लिए प्रसिद्ध पांडुपोल, भर्तृहरि मंदिर, नीलकण्ठ महादेव एवं नारायणी माता मन्दिर।
सवाई माधोपुर	सवाई माधोपुर	1955	
जयसंमद	सलूम्बर	1955	"जलचरों की बस्ती" क्योंकि जलीय जैव विविधता अधिक।

Springboard Academy

दर्रा	कोटा, झालावाड़	1955	• गागरोनी तोते
तालछापर	चुरू	1962	• काले हिरण, कुरजा पक्षी एवं गुरु द्रोणाचार्य आश्रम स्थित। • मोचिया घास
कुंभलगढ़	उदयपुर, पाली व राजसमंद	1971	• भेड़ियों एवं रणकपुर जैन मंदिर के लिए प्रसिद्ध।
जवाहर सागर	बूँदी, कोटा, चित्तौडगढ़	1975	• घड़ियालों के लिए प्रसिद्ध। • गरडिया महादेव मन्दिर, गेपरनाथ मन्दिर
राष्ट्रीय चम्बल घड़ियाल	धौलपुर, करौली बूँदी, कोटा, स. माधोपुर	1979	• घड़ियाल, मगरमच्छ, डॉल्फिन के लिए प्रसिद्ध।
सीतामाता वन्य जीव अभयारण्य	प्रतापगढ़, चित्तौडगढ़ व सलूम्बर	1979	• यहाँ अधिकतम जैव विविधता पाई जाती है। • सागवान वृक्ष अधिक पाए जाते है। • उड़न गिलहरी, पैंगोलिन, चीतल और चौसिंगा के लिए प्रसिद्ध
नाहरगढ़	जयपुर व जयपुर ग्रामीण	1980	• जैविक उद्यान के रूप में विकसित • जयपुर जन्तुआलय (रामनिवास बाग से) स्थानांतरित • इसे एक्जोटिक पार्क के रूप में स्थापित किया जायेगा। • लॉयन सफारी की शुरुआत की।
राष्ट्रीय मरु उद्यान	जैसलमेर, बाड़मेर (3162 Km²)	1980	• राज्य का सबसे बड़ा अभयारण्य, सेवण घास सर्वाधिक, गोडावण एवं चिंकारा अधिक • इसमें फॉसिल पार्क स्थित है। • गोडावण प्रजनन केन्द्र
रामगढ़ विषधारी	बूँदी	1982	• इसमें अजगर पाए जाते है। • इसमें मेज नदी बहती है। • कनक सागर झील (दुगारी बाँध) • राज्य की 4th बाघ परियोजना

जमवारामगढ़	जयपुर ग्रामीण	1982	• धोक वन पाए जाते है • जमवाय माता का मन्दिर
टॉडगढ़ अरावली	ब्यावर , पाली, राजसमंद	1983	
फुलवारी की नाल	उदयपुर कोटड़ा	1983	• सोम, मानसी व वाकल नदियाँ बहती है।
भैंसरोड़गढ़	चित्तौड़गढ़	1983	• घड़ियालों के लिए प्रसिद्ध • चम्बल + ब्राह्मणी नदी के किनारे स्थित
शेरगढ़	बारां	1983	• ये साँपों, शेरगढ़ दुर्ग, परवन नदी के लिए प्रसिद्ध । "साँपों की शरणस्थली"
कैलादेवी	करौली सवाई माधोपुर	1983	सर्वाधिक धोक वन
सवाई मानसिंह	सवाई माधोपुर	1984	
बंध बारेठा	भरतपुर	1985	"पक्षियों का घरौंदा"; कुकुन्द नदी व बंध बारेठा झील
सज्जनगढ़	उदयपुर	1987	• "प्रथम बॉयोलॉजिकल पार्क" • राजस्थान का दूसरा छोटा अभयारण्य
बस्सी	चित्तौड़गढ़	1988	जलेश्वर महादेव
माउंट आबू	सिरोही	2008	• 'डिक्लिप्टेरा आबू ऐंसिस' वनस्पति पाई जाती है। (अम्बरतरी) • जंगली मुर्गे

बाघ परियोजनाएँ

राजस्थान में 5 बाघ परियोजनाएँ

- रणथम्भौर
- सरिस्का
- मुकुंदरा हिल्स
- रामगढ़ विषधारी
- धौलपुर-करौली

1. रणथम्भौर	1974	स. माधोपुर करौली बूंदी टोंक	1530.23 Km²	रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान, स. माधोपुर अभयारण्य, कैलादेवी, राष्ट्रीय चम्बल अभ.
2. सरिस्का	1978	अलवर, जयपुर, जयपुर ग्रामीण	1213.34 Km²	सरिस्का और जमवारामगढ़ अभयारण्य
3. मुकुंदरा हिल्स	2013	कोटा, बूंदी, झालावाड़, चित्तौड़	1135.78 Km²	मुकुंदरा हिल्स राष्ट्रीय उद्यान, दरा अभयारण्य, चम्बल अभयारण्य, जवाहरसागर अभयारण्य
4. रामगढ़ विषधारी	2021	बूंदी, कोटा, झालावाड़	1496.49 Km²	रामगढ़ विषधारी
5. धौलपुर-करौली	2023	धौलपुर-करौली	599.64 Km²	

रामसर साइट

→ वर्तमान में राज्य में दो रामसर साइट है।

1. केवलादेव 1981 → साइबेरियन सारस
2. सांभर 1990 → कुरजा एवं राजहंस

कंजर्वेशन रिजर्व

→ राज्य में कुल 37 कंजर्वेशन रिजर्व है:-

1. जोड़बीड़ गढ़वाला → बीकानेर

२. जवाई बाँध लैपर्ड-I → पाली

३. जवाई बाँध लैपर्ड-II → पाली

4. बीड़ → झुंझुनूं

5. बांसियाल-खेतड़ी → नीम का थाना

6. बांसियाल-खेतड़ी बागार → नीम का थाना

7. मनसा माता → झुंझुनूं, नीम का थाना

8. बीसलपुर → केकड़ी

९. सुंधा माता → जालौर-सिरोही

10. शाकम्भरी → सीकर, नीम का थाना

11. गोगेलाव → नागौर

१२. रोटू → नागौर

13. गुढ़ा विश्नोईयां → जोधपुर

14. उम्मेदगंज पक्षी विहार → कोटा

15. शाहबाद कन्जर्वेशन → बारां

16. बीड़ घास फुलिया खुर्द → शाहपुरा

17. बागदरा मगरमच्छ → उदयपुर

18. रणखार → सांचौर

19. शाहबाद-तलहटी → बारां

२०. वाड़ाखेड़ा → सिरोही

२१. झालाना-आमागढ़ → जयपुर

२२. रामगढ़-कुंजी-सुनवास → बारां

२३. अरवर गाँव (खड़मोर) → अजमेर

२४. खींचन (कुरजा) → फलौदी

२५. हमीरगढ़ → भीलवाड़ा

२६. बांझ आम्ली → बारां

२७. सोरसन-I → बारां

२८. सोरसन-II → बारां

२९. सोरसन-III → बारां

30. महसीर → उदयपुर

Springboard ACADEMY

31. बीड़ फतेहपुर → सीकर
32. बीड़ मुहाना -A → जयपुर
33. बीड़ मुहाना -B → जयपुर (सबसे छोटा)
34 अमरख महादेव लैपर्ड → उदयपुर
35. बालेश्वर → सीकर एवं नीम का थाना (सबसे बड़ा)
36. तंगा भैरव घाटी → अजमेर
37 आसोप कंजर्वेशन रिजर्व → भीलवाड़ा

आखेट निषेध क्षेत्र (राज्य में कुल 33)

- सबसे बड़ा - कोटसर सम्वतसर - चुरु - बीकानेर
- सबसे छोटा - कनक सागर (बूँदी)
- अन्य
  - जोधपुर – डोली, गुढा बिश्नोई
  - बीकानेर – जोड़बीड़, मुकाम, बज्जू, देशनोक
  - अजमेर – सोखलिया, तिलोरा
  - जयपुर – सन्थाल, महला

II. बाह्य स्थाने संरक्षण :-

A. जन्तु आलय— राजस्थान में 5 जन्तु आलय है।

(i) जयपुर जन्तुआलय-
राज्य का प्रथम जन्तुआलय।

निर्माण - रामसिंह-II, (1876) राम निवास बाग
वर्तमान में नाहरगढ़ अभयारण्य में स्थानांतरित।
यहाँ घड़ियाल प्रजनन केन्द्र स्थित है।

(ii) उदयपुर जन्तुआलय- 1878, गुलाबबाग (उदयपुर) में स्थापित।
→ राज्य का दूसरा जन्तुआलय
वर्तमान- सज्जनगढ़ जैविक उद्यान में स्थानांतरित।

(iii) बीकानेर जन्तुआलय- स्थापना - 1922

Springboard Academy

(iv) जोधपुर जन्तुआलय-

स्थापना- 1936
पक्षीशाला एवं गोडावन प्रजनन केन्द्र स्थित है।

(v) कोटा जन्तुआलय- इसकी स्थापना- 1954

(B) मृग उद्यान- राजस्थान में कुल 7 मृग उद्यान है।

1. अशोक	→ जयपुर	5. पुष्कर	→ अजमेर
2. संजय	→ जयपुर ग्रामीण	6. सज्जनगढ़	→ उदयपुर
3. अमृता देवी	→ जोधपुर	7. दुर्ग	→ चित्तौड़गढ़
4. माचिया सफारी	→ जोधपुर		

वन्यजीव शुभंकर - शुरुआत- मार्च 2016, वन विभाग द्वारा

1. अजमेर	→ खड़मोर पक्षी	18. जालौर	→ भालू
2. अलवर	→ सांभर	19. जोधपुर	→ कुरजा पक्षी
3. बारां	→ मगरमच्छ	20. कोटा	→ उदबिलाव
4. बीकानेर	→ बटबड़/रेत का तीतर	21. टोंक	→ हंस
5. बूंदी	→ सुर्खाब	22. प्रतापगढ़	→ उड़न गिलहरी
6. चुरू	→ काला हिरण	23. स. माधोपुर	→ बाघ
7. दौसा	→ खरगोश	24. सीकर	→ शाहिन (बाज)
8. डूंगरपुर	→ जांघिल	25. सिरोही	→ जंगली मुर्गी
9. भीलवाड़ा	→ मोर	26. झालावाड़	→ गागरोनी तोता
10. बाँसवाड़ा	→ जलपीपी	27. करौली	→ घड़ियाल
11. बाड़मेर	→ लोमड़ी	28. नागौर	→ राजहंस
12. भरतपुर	→ साइबेरियन सारस	29. पाली	→ तेंदुआ
13. चित्तौड़गढ़	→ चौसिंगा	30. राजसमंद	→ भेड़िया
14. झुंझुनूं	→ काला तीतर	31. श्रीगंगानगर	→ चिंकारा
15. धौलपुर	→ पंचीरा (इंडियन स्कीमर)	32. उदयपुर	→ कब्र बिज्जू
16. हनुमानगढ़	→ छोटा किलकिला	33. जयपुर	→ चीतल
17. जैसलमेर	→ गोडावण		

Springboard Academy

मुख्य वन्यजीव—

1. चिंकारा—

- 1981 में राज्य पशु घोषित।
- वैज्ञानिक नाम → गजेला - गजेला
- नाहरगढ़ अभयारण्य एवं राष्ट्रीय मरुस्थल अभयारण्य चिंकारा के लिए प्रसिद्ध।

२. गोडावण—

- 1981 में राज्य पक्षी घोषित।
- वैज्ञानिक नाम- Ardeotis Nigriceps
- इसे ग्रेट 'इंडियन बस्टर्ड' एवं 'सोन चिड़िया' भी कहा जाता है।
- यह सर्वाधिक जैसलमेर (मरु उद्यान) अजमेर (सांखलिया) एवं बारां (सोरसन) में पाया जाता है।
- गोडावन प्रजनन केन्द्र, जोधपुर, जैसलमेर (मरु उद्यान) एवं बारां (सोरसन) में स्थित है।
- गोडावन का हैचिंग सेंटर (कृत्रिम प्रजनन केन्द्र) रामदेवरा (जैसलमेर) में स्थापित किया गया।

Spring Board ACADEMY

उद्योग / Industries

- सामान्य परिचय
- उद्योगों का वर्गीकरण
- औद्योगिक विकास
- अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

A. सामान्य परिचय –

औद्योगिक विकास की दृष्टि से राजस्थान पिछड़ा हुआ राज्य है क्योंकि –

- राजस्थान में जलवायु की विपरित दशाएँ पाई जाती है।
- आधारभूत अवसंरचना का अल्प विकास
- औद्योगिक क्षेत्र में निवेश कम होना।
- कुशल श्रमिकों का अभाव।

कोटा को तीव्र औद्योगिक विकास के कारण राजस्थान की "औद्योगिक नगरी" कहा जाता है।

↳ वर्तमान में राजस्थान में –

- सर्वाधिक उद्योग / फैक्ट्री – जयपुर
- सर्वाधिक वृहद उद्योग – अलवर

B. उद्योगों का वर्गीकरण –

उद्योगों का वर्गीकरण

- आकार के आधार पर
- विनिर्माण के आधार पर
- स्वामित्व के आधार पर

Springboard Academy

1. आकार के आधार पर-

आकार के आधार पर उद्योगों को तीन भागों में बाँटा गया है, जिसका आधार पूंजी एवं टर्नओवर है।

उद्योग	पूंजी / निवेश	टर्नओवर
(i) सुक्ष्म	1 करोड़	5 करोड़
(ii) लघु	1 - 10 करोड़	5 - 50 करोड़
(iii) मध्यम	10 - 50 करोड़	50 - 250 करोड़

कुटीर उद्योग- निम्न तकनीक पर आधारित उद्योग जिनका उद्देश्य लाभ प्राप्त करने के स्थान पर आजीविका चलाना होता है।

विनिर्माण के आधार पर- विनिर्माण के आधार पर उद्योगों का कच्चे माल के आधार पर वर्गीकरण किया जाता है।

विनिर्माण के आधार पर

- कृषि आधारित उद्योग
- खनिज आधारित उद्योग
- वनोत्पाद आधारित उद्योग
- इंजीनियरिंग / तकनीकी उद्योग
- रासायनिक उर्वरक उद्योग

I. कृषि आधारित उद्योग-

1. सूती वस्त्र उद्योग
2. चीनी उद्योग
3. ऊन उद्योग
4. वनस्पति घी एवं सरसों तेल उद्योग
5. डेयरी उद्योग
6. बायोडिजल
7. जैतून तेल उद्योग

1. सूती वस्त्र उद्योग- (कच्चा माल - कपास)

↳ प्रथम सूती वस्त्र मिल - 'दी कृष्णा कॉटन मिल'

- स्थापना- 1889 (ब्यावर, अजमेर)
- संस्थापक- सेठ दामोदर दास राठी एवं कर्नल डिक्सन

सार्वजनिक सूती वस्त्र उद्योग

- 1st एडवर्ड (ब्यावर-1906)
- विजयनगर (ब्यावर)
- महालक्ष्मी (ब्यावर) (1925)

राजस्थान की सहकारी सूती वस्त्र मिलें

- राजस्थान सहकारी कताई मिल, गुलाबपुरा (भीलवाड़ा - 1965)
  - (प्रथम सहकारी सूती वस्त्र मिल)
- गंगापुर सहकारी कताई मिल, (भीलवाड़ा, 1981)
- श्रीगंगानगर सहकारी कताई मिल (हनुमानगढ़ - 1978)
- गुलाबपुरा स्पिनिंग & जिनिंग सहकारी मिल

SPINFED (स्पिनफैड)- Rajasthan State Cooperative Spinning & Ginning Mills federation Ltd.

स्थापना- 1 अप्रैल, 1993

यह सहकारी सूती वस्त्र मिलों का संघ है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य-

1. सूती वस्त्र उद्योग कृषि आधारित सबसे बड़ा उद्योग।
2. यह एक परम्परागत उद्योग है।
3. महिलाएँ इस उद्योग में सर्वाधिक कार्यरत है।

- **महाराजा उम्मेद मिल्स लिमिटेड-** (पाली)
  - 1939 (राजस्थान की सबसे बड़ी सूती वस्त्र मिल)

NOTE:- भीलवाड़ा को 'राजस्थान का मैनचेस्टर'/ वस्त्रनगरी/ टैक्सटाइल सिटी कहा जाता है।

Springboard ACADEMY

उभरता हुआ वस्त्र नगर- भिवाड़ी

२. चीनी उद्योग-

(कच्चा माल- गन्ना एवं चुकन्दर)

राजस्थान में चीनी मिलें

- मेवाड़ शुगर मिल
  - १९३२ (चित्तौड़)
  - प्रथम निजी चीनी मिल
- उदयपुर शुगर मिल (1976)
- गंगानगर शुगर मिल (1937) श्री गंगानगर
  - प्रथम- सार्वजनिक चीनी मिल (1956)
- केशोरायपाटन शुगर मिल (1965 बूंदी)
  - प्रथम- सहकारी चीनी मिल

Note:- गंगानगर शुगर मिल एकमात्र शुगर मिल है जहाँ 1968 में चुकन्दर व गन्ने से चीनी बनाई गई। वर्तमान में यह बन्द है। जिसके द्वारा वर्तमान में निम्नलिखित उपक्रमों का संचालन किया जा रहा है,

गंगानगर शुगर मिल

- देशी शराब का निर्माण
- हैरिटेज लिकर का निर्माण (जयपुर)
- दी हाइटेक प्रिसिजन ग्लास फैक्ट्री (धौलपुर)
- सैनिटाइजर का निर्माण

३. ऊन उद्योग :- [आधार- पशु सम्पदा (भेड़, ऊंट)]

ऊन उत्पादन सर्वाधिक (२०२२-२३ के अनुसार)- 1. राजस्थान (47.98 %)
२. J&K

प्रमुख ऊन उद्योग-

1. केन्द्रीय ऊन बोर्ड - जोधपुर

Spring Board Academy

ऊन कॉम्पलैक्स
↓
1. खारा (बीकानेर)
2. ब्यावर
3. नरबदखेड़ा
4. गुहाला (ब्यावर)

2. राजस्थान में सर्वाधिक ऊन उत्पादन - जोधपुर
3. राजस्थान में सबसे बड़ी ऊन मण्डी - बीकानेर
4. वूल टेस्टिंग प्रयोगशाला - बीकानेर
5. स्टेट वूल मिल - बीकानेर
6. ऊन प्रशिक्षण केन्द्र - जयपुर
7. केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान केन्द्र - अविकानगर (टोंक)
8. वर्स्टेड स्पिनिंग मिल्स - लाडनूं (डीडवाना-कुचामन) एवं चूरू

4. वनस्पति घी एवं सरसों तेल उद्योग-

- राजस्थान में प्रथम वनस्पति घी फैक्ट्री- भीलवाड़ा (स्थापना-1964)
- वर्तमान में वनस्पति घी का सर्वाधिक उत्पादन- जयपुर
- सरसों तेल का सर्वाधिक उत्पादन- जयपुर
- सरसों तेल के प्रमुख कारखानें-
  - चम्बल - जयपुर
  - वीर बालक - जयपुर
  - नेताजी - जयपुर
  - इंजन मार्का - भरतपुर

5. डेयरी उद्योग-

राजस्थान में डेयरी उद्योग का सर्वाधिक विकास - जयपुर में

राजस्थान राज्य डेयरी विकास निगम - 1975 (जयपुर)

↳ विश्व बैंक के सहयोग से।

Springboard ACADEMY

डेयरी विकास के लिए राज्य में त्रिस्तरीय ढाँचा बनाया गया-

- **शीर्ष**
  RCDF - 1977
  राज. राज्य सहकारी संघ (जयपुर)
- **जिला स्तर पर-**
  जिला दुग्ध सहकारी संघ - 24
- **ग्रामीण स्तर पर-**
  प्राथमिक सहकारी दुग्ध समितियाँ - 18,781

RCDF (Rajasthan Co-operative dairy federation) को राजस्थान डेयरी विकास निगम के स्थान पर बनाया गया।

NOTE :-

➤ राजस्थान में संचालित प्रमुख डेयरी-

- राजस्थान की प्रथम डेयरी - पद्मा (अजमेर), 1938
- वरमूल (WRMUL) – Western Rajasthan Milk Union Ltd (जोधपुर)
- उरमूल (URMUL) – Uttari Rajasthan Milk Union Ltd. (बीकानेर)
- गंगमूल (Gangmul)– Ganganagar Milk Union Ltd. (हनुमानगढ़)
- कैमल मिल्क डेयरी - Ist = बीकानेर, 2009 (जोड़बीड़)
  IInd = जैसलमेर, 2021 (पोकरण)
- मेट्रो डेयरी - गोविंदगढ़ (जयपुर ग्रामीण) ⟶ क्षमता - 11 लाख लीटर

➤ ऊँटनी के दुग्ध विपणन का केन्द्र जयपुर में स्थापित किया गया है।
क्षमता - 21000 लीटर / day

6. बायोडीजल-

- कच्चा माल - रतनजोत / जैट्रोफा एवं करंज
- बायोडीजल रिफाइनरी - कलड़वास (उदयपुर)
- बायोडीजल प्लांट - झामर कोटड़ा (उदयपुर)

Springboard ACADEMY

7. जैतून तेल/ ऑलिव ऑयल-

- कच्चा माल- जैतून
- जैतून रिफाइनरी - लूणकरणसर (बीकानेर)

> नोट:- ऑलिव टी-प्लांट जयपुर ग्रामीण (बस्सी) में स्थापित किया गया है।
> ↳ सहयोग - इजराइल

II. खनिज आधारित उद्योग-

- सीमेंट उद्योग
- काँच उद्योग
- नमक उद्योग
- मार्बल उद्योग
- ग्रेनाइट उद्योग
- अभ्रक उद्योग

1. सीमेंट उद्योग- [सर्वाधिक सीमेंट उत्पादन - चित्तौड़गढ़ (निम्बाहेड़ा)]

- कच्चा माल - चूना पत्थर, जिप्सम व सिलिका
- प्रथम सीमेंट फैक्ट्री - ACC (एसोसिएट सीमेंट कम्पनी) लाखेरी (बूंदी)
- स्थापना - 1915 ई. (उत्पादन 1917 ई.) (सहयोग - क्लिक निक्सन)

सफेद सीमेंट फैक्ट्री-

1. J.K व्हाइट सीमेंट फैक्ट्री - गोटन (नागौर), 1984
2. J.K व्हाइट सीमेंट फैक्ट्री - मांगरोल (चित्तौड़)
3. बिरला व्हाइट सीमेंट फैक्ट्री - खारियाखंगार (जोधपुर)

सीमेंट उत्पादन की प्रमुख इकाईयाँ-

- ✓ J.K सीमेंट फैक्ट्री - निम्बाहेड़ा (चित्तौड़गढ़)
- ✓ अल्ट्राटेक सीमेंट फैक्ट्री - चित्तौड़गढ़
- ✓ चेतक सीमेंट फैक्ट्री - चित्तौड़गढ़

Springboard Academy

- लाफार्ज सीमेंट फैक्ट्री - चित्तौड़गढ़
- एसोसिएट सीमेंट फैक्ट्री - लाखेरी (बूंदी)
- बांगड़ सीमेंट फैक्ट्री - पाली
- बिनानी सीमेंट फैक्ट्री - पिंडवाड़ा (सिरोही)
- श्री सीमेंट फैक्ट्री = (3) → श्री गंगानगर, झुंझुनूं, ब्यावर
- श्री राम सीमेंट फैक्ट्री - श्री राम नगर (कोटा)
- ग्रासिम सीमेंट फैक्ट्री - कोटपुतली - बहरोड़
- मंगलम सीमेंट फैक्ट्री - मोड़क (कोटा)
- जयपुर सीमेंट फैक्ट्री - सवाई माधोपुर
- अम्बुजा सीमेंट फैक्ट्री -
  - रास/बाड़ियावास (ब्यावर) → पहले पाली में स्थित।
  - मुंडवा - मारवाड़ (नागौर)
- वंडर सीमेंट फैक्ट्री - चित्तौड़
- J & K लक्ष्मी सीमेंट फैक्ट्री - सिरोही

3. काँच उद्योग-

कच्चा माल- सिलिका सैंड, सोडियम सल्फेट, शोरा

राजस्थान में काँच उद्योग का सर्वाधिक विकास - धौलपुर व अलवर

प्रमुख काँच फैक्ट्री

धौलपुर
- धौलपुर ग्लास फैक्ट्री
- दी हाइटेक प्रिसिजन ग्लास फैक्ट्री

कोटा
- सेमकोर ग्लास फैक्ट्री

अलवर
- सेंट गोबेन ग्लास फैक्ट्री (भिवाड़ी, खैरथल-तिजारा)

3. नमक उद्योग-

- प्रमुख स्रोत- महासागरीय जल एवं खारे पानी की झील
- इस उद्योग का प्रमुख आधार राजस्थान में खारे पानी की झीलें हैं।

Springboard Academy

नमक उद्योग

- सांभर → संचालन = हिन्दुस्तान सॉल्ट लिमिटेड द्वारा
  (जयपुर ग्रामीण)
  (सर्वाधिक नमक उत्पादन)
- पचपदरा
  (बालोतरा)
  (सर्वश्रेष्ठ श्रेणी का नमक)
- डीडवाना
  (नागौर)
  (निम्नतम श्रेणी का नमक)

4. मार्बल उद्योग -

- मार्बल उद्योग में राजस्थान का प्रथम स्थान है।
- राजसमंद मे सर्वाधिक मार्बल उत्पादन।
  ↳ सर्वाधिक मार्बल प्रोसेसिंग इकाईयाँ
- किशनगढ़ (अजमेर) मार्बल मण्डी का सबसे बड़ा विपणन केन्द्र।
- राजस्थान का सफेद मार्बल (मकराना, डीडवाना कुचामन) विश्व प्रसिद्ध माना जाता है।

5. ग्रेनाइट उद्योग -

इस पत्थर का उत्पादन सर्वाधिक राजस्थान के जालोर, बाड़मेर सिरोही क्षेत्र से होता है।

- जालोर को राजस्थान में ग्रेनाइट सिटी कहा जाता है।

6. अभ्रक उद्योग -

- राजस्थान में अभ्रक ईंट बनाने का कारखाना - भीलवाड़ा
- भीलवाड़ा का अभ्रक / माईका सिटी भी कहा जाता है।
- उपयोग - अभ्रक से इलेक्ट्रॉनिक उपकरण बनाए जाते है।

III. वनोत्पाद आधारित उद्योग -

- ➢ लकड़ी का नककाशिदार फर्नीचर - बाड़मेर
- ➢ गोंद उत्पादन - चौहटन (बाड़मेर)

Springboard ACADEMY

➤ टसर रेशम उत्पादन (कार्यक्रम - 1986)
↳ उदयपुर, बांसवाड़ा, कोटा में संचालित किया गया।

IV. इंजीनियरिंग या तकनीकी उद्योग-

उद्योग	उत्पाद	स्थान
नेशनल इंजीनियरिंग कम्पनी	बॉल एवं बेरिंग	जयपुर
जयपुर मेटल्स	बिजली के मीटर	जयपुर
केप्सटन मीटर	पानी के मीटर	जयपुर, पाली
राजस्थान इले० कॉर्पोरेशन	टी.वी	जयपुर
मान इण्डस्ट्रीज	लोहे के दरवाजे एवं टॉवर निर्माण	जयपुर
केबल इण्डस्ट्रीज	केबल	कोटा
इस्ट्रूमेंटेशन लिमिटेड	यंत्र/ मशीन	कोटा
J & K इलेक्ट्रॉनिक्स	टी.वी.	कोटा
फ्लोर्सपार संयंत्र	लोहे के साथ मिलाकर संयत्र निर्माण	डूंगरपुर
सिमको वैगन फैक्ट्री (1957)	रेलवे डिब्बों का निर्माण	भरतपुर

V. रासायनिक उर्वरक उद्योग-

- चम्बल फर्टिलाइजर्स एवं केमिकल्स - गड़ेपान (कोटा)
- राष्ट्रीय केमिकल्स एवं फर्टिलाइजर्स (DAP - डाई-अमोनियम फॉस्फेट)
  - कपासन (चित्तौडगढ़)
- राजस्थान स्टेट केमिकल वर्क्स - डीडवाना (नागौर) - 1964
- पाइराइट एण्ड फॉस्फेट लिमिटेड - सलादीपुरा (सीकर)

स्वामित्व के आधार पर

- **निजी उद्योग** – व्यक्तिगत आधार
- **सार्वजनिक उद्योग** – सरकार का अधिकार
- **सहकारी उद्योग** – व्यक्तिगत एवं सरकार दोनों का अधिकार

सार्वजनिक उद्योग

1. केन्द्र सरकार के उपक्रम - 7
2. राज्य सरकार के उपक्रम - 23
   - 6 – वैधानिक बोर्ड
   - 17 – कम्पनी अधिनियम

1. केन्द्र सरकार के उपक्रम-

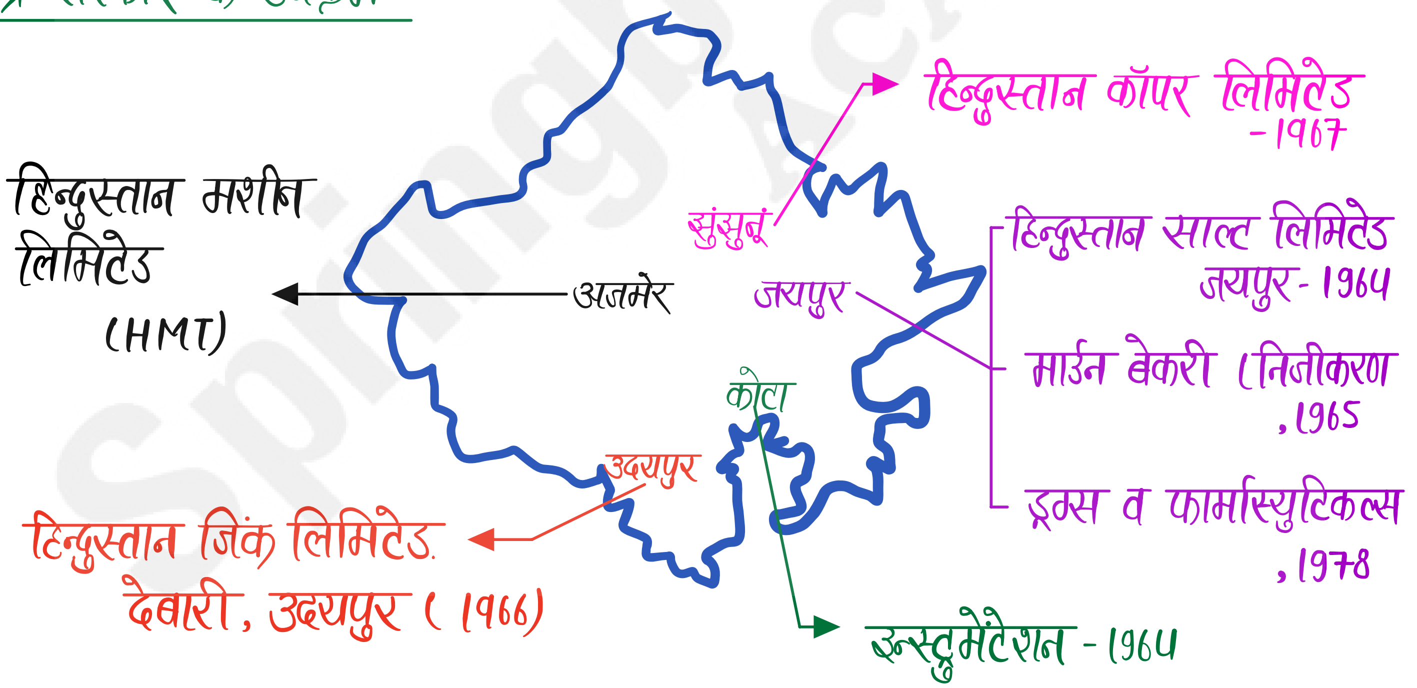

2. राज्य सरकार के उपक्रम-

 # वैधानिक बोर्ड- 6

- 1955 → राजस्थान वित्त निगम
- 1957 → कृषि भण्डारण निगम
- 1 Oct. 1964 → राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम (RSRTC)

Springboard Academy

1970 → राजस्थान राज्य हाउसिंग बोर्ड निगम (RHB)
1974 → राज्य कृषि विपणन बोर्ड
1975 → राज्य भूमि विकास निगम

कम्पनी अधिनियम - 17

राजस्थान के कम्पनी अधिनियम में संचालित उपक्रम - 17 है, जिसमें से प्रमुख-

1. RSMML – Raj State Mines & Minerals Ltd. (30 oct. 1974) उदयपुर

2. राज्य विद्युत वितरण निगम - जोधपुर, अजमेर, जयपुर

3. REIL - Rajasthan electronics & Instruments Ltd. - कनकपुर (जयपुर)
   ↳ इसके द्वारा सॉफ्टवेयर IT, नवीकरणीय ऊर्जा संयंत्रों का निर्माण किया जाता है।

C. औद्योगिक विकास के प्रयास

- औद्योगिक नीति
- विशेष औद्योगिक क्षेत्र- (SEZ)
- औद्योगिक पार्क व कॉम्पलैक्स
- औद्योगिक निवेश कार्यक्रम
- औद्योगिक गलियारा
- औद्योगिक विकास संस्थान
- औद्योगिक विकास योजनाएँ

Springboard Academy

I. राजस्थान में औद्योगिक नीतियाँ-

सामान्य नीतियाँ
- 1978 (प्रथम)
- 1991
- 1994
- 1998
- 2010
- 1 जुलाई 2019 (नई औद्योगिक नीति)

MSME नीति (Micro Small Medium Enterprises Policy)
- 20 नवम्बर, 2015
- 17 सितम्बर, 2022

हैंडीक्राफ्ट/हस्तशिल्प नीति
- 17 सितम्बर, 2022

II. विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ)- क्रियान्वयन- Riico द्वारा

→ राजस्थान में सर्वाधिक SEZ जयपुर में स्थित है।

प्रमुख सेज	संबंधित क्षेत्र	जिला / स्थिति
बोरानाडा सेज	ग्वारगम, हैण्डीक्राफ्ट	जोधपुर (मानसरोवर)
सीतापुरा सेज	जेम्स & ज्वैलरी	जयपुर
महिन्द्रा सेज	आई.टी. हैण्डीक्राफ्ट	जयपुर (कलवाड़ा)
सोमानी सेज	हार्डवेयर एण्ड सॉफ्टवेयर	खैरथल-तिजारा
RNB सेज	टैक्सटाईल	बीकानेर
वाटिका सेज (प्रस्तावित)	I.T	जयपुर

Springboard ACADEMY

III. औद्योगिक पार्क एवं कॉम्पलैक्स-

1. जापानी पार्क (जेट्रो) (JETRO - Japan External Trade Organization)	1. नीमराना (कोटपुतली-बहरोड़) 2. घिलोट (कोटपुतली-बहरोड़)
2. कोरियन पार्क (KOTRA - Korea Trade Investment Promotion Agency)	घिलोट (कोटपुतली-बहरोड़)
3. सिरेमिक जोन	घिलोट
4. एग्रो फूड पार्क (राज्य सरकार)	श्रीगंगानगर, जोधपुर, कोटा, अलवर
5. मेगा फूड पार्क (केन्द्र सरकार)	रूपनगढ़ (अजमेर) प्रस्तावित - मथानिया (जोधपुर) पलाना (बीकानेर)
6. सूचना तकनीकी पार्क (I.T पार्क)	जयपुर, कोटा, उदयपुर, जोधपुर
7. मसाला पार्क (Spice Park)	1st - मथानिया, जोधपुर, 2nd - रामगंज मण्डी, कोटा
8. परिधान पार्क / अपैरल पार्क	जगतपुरा (महल रोड), जयपुर
9. स्टोन पार्क	मण्डोर (जोधपुर), मासलपुर (करौली), विसनोदा (धौलपुर) मण्डाना (कोटा)
10. साफ्टवेयर पार्क	कनकपुरा (जयपुर)
11. पुष्प पार्क	खुशखेड़ा (खैरथल-तिजारा)
12. होजरी पार्क	चौपंकी (खैरथल-तिजारा)

13. निर्यात संवर्द्धन औद्योगिक पार्क →	सीतापुरा (जयपुर), बोरानाडा (जोधपुर), नीमराना (कोटपुतली-बहरोड़)

NOTE- देश का प्रथम निर्यात संवर्द्धन औद्योगिक पार्क – सीतापुरा, जयपुर (1997)

कॉम्पलैक्स-

1. ऊन कॉम्पलैक्स →	खारा (बीकानेर), ब्यावर, गोहना (ब्यावर) नरबदखेड़ा (ब्यावर)
2. सिरेमिक कॉम्पलैक्स →	खारा (बीकानेर)
3. लेदर कॉम्पलैक्स →	मानपुरा माचेड़ी (जयपुर-ग्रामीण)
4. पेट्रो कॉम्पलैक्स →	बालोतरा

IV. औद्योगिक निवेश कार्यक्रम-

1. रिसर्जेंट राजस्थान → (2008)
2. रिसर्जेंट राजस्थान → (Nov. 2015)
3. निवेश/इन्वेस्ट राजस्थान समिट → (7 oct. 2022)
4. राईजिंग राजस्थान ग्लोबल इनवेस्टमेंट (2024) (9-10-11 दिसम्बर)

↳ उपरोक्त सभी कार्यक्रमों में सर्वाधिक निवेश 'उर्जा क्षेत्र' में हुआ है।

↳ राजस्थान राइजिंग के आँकड़े आना अभी बाकी है। (Update)

नोट:- निवेश कार्यक्रम का आयोजन करवाने वाली नोडल एजेंसी- BIP (ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टमेंट प्रमोशन)

- गठन- 1991
- उद्देश्य- 10 करोड़ से अधिक के औद्योगिक निवेश

(V) दिल्ली मुम्बई-इंडस्ट्रीयल कॉरिडोर -

वेस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडॉर-

- 1504 कि.मी.
- दादरी (U.P) से JLN पोर्ट (मुम्बई)
- 38% (लम्बाई लगभग-570 कि.मी.) राजस्थान से गुजरता है (कुल 6 राज्य व U.T से)
- सहायता - जापान
- उद्देश्य - औद्योगिक निर्यात को बढ़ावा देना।

DMIC के दोनों तरफ 150 कि.मी. की पट्टी को DMIC के रूप में विकसित किया जायेगा, जिसमें 24 औद्योगिक क्षेत्र एवं 8 औद्योगिक निवेश क्षेत्र बनाए जायेंगे, जिसमें से राजस्थान में—

निवेश क्षेत्र

(i) अजमेर - किशनगढ़
(ii) खुशखेड़ा - भिवाड़ी - नीमराना

28 Dec. 2020 को 'विशेष निवेश क्षेत्र' के रूप मे अधिसूचित

औद्योगिक क्षेत्र

(i) जयपुर - दौसा औद्योगिक क्षेत्र
(ii) राजसमंद - भीलवाड़ा औद्योगिक क्षेत्र
(iii) जोधपुर - पाली - मारवाड़

(RIICO की जिम्मेदारी)

12 Oct 2020 को 'विशेष निवेश क्षेत्र' के रूप मे अधिसूचित

↪ राजस्थान में DMIC का प्रथम चरण-

(a) खुशखेड़ा - भिवाड़ी - नीमराना (165 कि.मी²)

(b) जोधपुर - पाली - मारवाड़ (154 कि.मी²)

↓

इनके विकास हेतु एक संयुक्त स्पेशल पर्पज व्हीकल कंपनी – "राजस्थान इंडस्ट्रीयल डवलपमेंट कॉरपोरेशन" (RIDCO) की स्थापना – 15 मार्च, 2022

NOTE- प्रथम चरण में पूर्णतः राजकीय भूमि (Gov. Land) शामिल है।

VI. औद्योगिक संस्थान

- RFC → 1955 (जयपुर)
- RAJSICO → 3 जून, 1961 (जयपुर)
- RIICO → 1969 (जयपुर)
- RUDA → 1995 (जयपुर)

(a) RFC (Rajasthan financial Corporation / राज्य वित्त निगम-

स्थापना - जनवरी, 1955

मुख्यालय - जयपुर

उद्देश्य- अतिलघु, लघु एवं मध्यम उद्योगों को अल्पकालीन ऋण उपलब्ध करवाना। (ऋण राशि 2000-20 करोड़)

RFC की योजनाएँ-

(i) फ्लैक्सी ऋण योजना- इस योजना के तहत (MSME) अतिलघु, लघु व मध्यम उद्योगों को सस्ती दर पर ऋण उपलब्ध करवाना।

Springboard Academy

(२) **टॉप-अप योजना-** अतिलघु उद्योगों को तकनीकी व मशीनरी विकास के लिए ऋण उपलब्ध करवाने की योजना।

(३) **सैमफैक्स योजना / SEMFEX SCHEME-**

(Self Employed for Ex-Serviceman Scheme)

- भूतपूर्व सैनिकों को उद्योग स्थापित करने के लिए सहयोग करने वाली योजना।

> नोट:- RFC के द्वारा विश्वसनीय ऋणियों को सिल्वर, गोल्ड, प्लेटिनम कार्ड जारी किया जाता है।

(b) **राजसीको** (RAJSICO- Rajasthan Small Industries Corporation Limited)

स्थापना- जून, 1961

मुख्यालय - जयपुर

➡ उद्देश्य-
- आदिवासी क्षेत्रों में प्रशिक्षण उपलब्ध कराना।
- लघु उद्योगो को कच्चा माल, मशीनरी व तकनीकी सुविधा उपलब्ध करवाना।
- राजसीको लघु उद्योगो से उत्पादित माल के विपणन का कार्य करता है।

(c) **रीको** (Riico- Rajasthan State Industrial development and Investment Corporation Limited)

➡ स्थापना- २8 मार्च, 1969 (पुनर्गठन -1 जनवरी 1980)

➡ मुख्यालय- जयपुर

➡ उद्देश्य -
- मध्यम एवं वृहद उद्योगों को मध्यकालीन ऋण उपलब्ध करवाना।
- उद्योगों के लिए भूमि उपलब्ध करवाना।
- सेज कार्यक्रम का संचालन
- राजस्थान में उद्योगों की यह शीर्ष संस्था है।

(d) <u>रूडा</u> (RUDA - Rural Non-farm/Agriculture development Agency

➡ स्थापना - 1995

➡ मुख्यालय - जयपुर

➡ उद्देश्य - गैर कृषि क्षेत्रों में विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित प्रशिक्षण उपलब्ध कराना।

➡ रूडा के प्रशिक्षण क्षेत्र - ऊन एवं वस्त्र उद्योग, चमड़ा उद्योग, लघु व गौण खनिज संबंधित होते हैं।

VII. औद्योगिक विकास योजनाएँ -

(a) एसाईड योजना -

↪ औद्योगिक निर्यात को बढ़ावा देने के लिए शुरू की गई योजना।

↪ शुरुआत - मार्च, 2002

(b) मुख्यमंत्री स्वावलम्बन योजना -

शुरुआत - 2013

↪ उद्देश्य - इस योजना के तहत हस्त आधारित व दस्तकारों को स्वयं का उद्योग स्थापित करने के लिए 10 लाख रु तक ऋण उपलब्ध करवाना।

Springboard ACADEMY

(c) मुख्यमंत्री युवा उद्यमिता योजना-

- शुरुआत- 1 अप्रैल, 2013 (आदेश मार्च 2023 के अनुसार 31 जुलाई 2024 तक लागू)
- उद्देश्य- जिन युवाओं के पास लीक से हटकर उद्योग स्थापित करने की योजना है, उन्हें आर्थिक सहयोग व ऋण उपलब्ध करवाना।
- योग्यता- • आयु- 18-35 वर्ष
  • 10 वीं + ITI या ग्रेजुएट
- ऋण राशि- 25 लाख – 1 करोड़ (ऋण लौटाने की अवधि 7 वर्ष)

(d) मुख्यमंत्री लघु उद्योग प्रोत्साहन योजना-

- शुरुआत - 17 dec. 2019 (प्रभावी- 31 मार्च, 2024)
- योजना- लघु उद्योगों के ऋण पर ब्याज अनुदान संबंधित योजना।

	ऋण राशि	ब्याज अनुदान
1.	25 लाख	8 %
2.	25 लाख- 5 करोड़.	6 %
3.	5 करोड़ - 10 करोड़.	5%

D. अन्य महत्वपूर्ण तथ्य-

(i) औद्योगिक विकास के लिए–

जिला स्तर पर - जिला उद्योग केन्द्र - 36

उपकेन्द्र - 8

(ii) सिंगल विण्डो क्लियरेंस एक्ट - 2011

↳ संशोधित 2020

(iii) ई- गवर्नेंस व IT नीति- नवम्बर 2015

(iv) राज्य के विशेष औद्योगिक संस्थान-

- ✓ कम्प्यूटर एडेड कार्पिट (Carpet) डिज़ाइन सेंटर - जयपुर
- ✓ कम्प्यूटर एडेड टैक्सटाईल डिजाइन सेंटर - भीलवाड़ा
- ✓ ब्रह्मगुप्त अनुसंधान व विकास संस्थान - जोधपुर
- ✓ फुट वियर डिजाईन सेंटर - मंडोर (जोधपुर)
- ✓ NIFt (National Institute of fashion Technology) - जोधपुर
- ✓ सिरेमिक अनुसंधान व विकास केन्द्र - बीकानेर

(v) राजस्थान में निवेश प्रोत्साहन नीति-

- ✓ निवेश प्रोत्साहन नीति - 2003
- ✓ राजस्थान उद्योग व निवेश प्रोत्साहन नीति - 2010
- ✓ राजस्थान निवेश प्रोत्साहन नीति - 2014
- ✓ राजस्थान निवेश प्रोत्साहन नीति - 17 dec. 2019
- ✓ राजस्थान निवेश प्रोत्साहन नीति - 7 Oct. 2022

RIPS 2022 के उद्देश्य -

- विनिर्माण और सेवा क्षेत्र में 15% वार्षिक वृद्धि।
- संतुलित और समावेशी क्षेत्रीय विकास।
- 2027 तक 10 लाख रोजगार सृजित।
- पर्यावरण संरक्षण हेतु हरित हाइड्रोजन एवं वैकल्पिक ऊर्जा को प्रोत्साहन।

NOTE- राजस्थान में सर्वाधिक औद्योगिक निर्यात क्रमशः-

1st इंजीनियरिंग/अभियांत्रिकी 2. जवाहरात व आभूषण 3. धातुएँ 4. कपड़ा

Springboard ACADEMY

ऊर्जा / Energy

- ✓ ऊर्जा का वर्गीकरण
- ✓ राजस्थान के प्रमुख ऊर्जा प्रोजेक्ट
- ✓ ऊर्जा संबंधी संस्थान
- ✓ ऊर्जा संबंधित योजनाएँ
- ✓ अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु

A. ऊर्जा संसाधनों का वर्गीकरण

संभावना के आधार पर

नवीकरणीय
1. हाइड्रो/जल
2. सौर ऊर्जा
3. पवन ऊर्जा
4. बायो गैस
5. बायो मास
6. ज्वारीय ऊर्जा
7. भू-तापीय ऊर्जा

अनवीकरणीय
1. तापीय ऊर्जा
   - कोयला
   - प्राकृतिक गैस
   - पेट्रोलियम
2. परमाणु ऊर्जा
   - यूरेनियम
   - थोरियम

उपयोग / उत्पादन के आधार पर

परम्परागत
1. कोयला
2. प्राकृतिक गैस
3. पेट्रोलियम
4. हाइड्रो / जलीय ऊर्जा

गैर-परम्परागत
1. परमाणु ऊर्जा
2. सौर ऊर्जा
3. पवन ऊर्जा
4. बायो मास
5. बायो गैस
6. ज्वारीय ऊर्जा

(a) **परम्परागत ऊर्जा संसाधन** – वे ऊर्जा संसाधन जिनका उपयोग लम्बे समय से किया जा रहा हो और जिनसे ऊर्जा पुरानी तकनीक से उत्पादित की जाती है।
उदाहरण- जल ऊर्जा, तापीय ऊर्जा (कोयला, गैस, पेट्रोलियम)

Springboard ACADEMY

(b.) गैर-परम्परागत ऊर्जा स्त्रोत-

वे ऊर्जा संसाधन जिनसे ऊर्जा नवीन/उन्नत तकनीक से उत्पादित की जाती है।

- उदा०- परमाणु ऊर्जा, पवन ऊर्जा, सौर ऊर्जा, बायोगैस ऊर्जा आदि।

NOTE :-

उत्पादन क्षमता के आधार पर ऊर्जा स्टेशन के प्रकार

- सुपर स्टेशन → 1000 MW से अधिक ऊर्जा उत्पादन वाला स्टेशन।
- सुपर क्रिटिकल स्टेशन → 500 MW से अधिक ऊर्जा उत्पादन वाली इकाई।
- अल्ट्रा मेगा पॉवर प्रोजेक्ट (UMPP) → 4000 MW से अधिक ऊर्जा उत्पादन वाला स्टेशन।

8. राजस्थान के प्रमुख ऊर्जा प्रोजेक्ट

राजस्थान में ऊर्जा परियोजनाएँ

- I. परम्परागत ऊर्जा
- II. गैर-परम्परागत ऊर्जा

I. परम्परागत ऊर्जा- जलीय ऊर्जा एवं तापीय ऊर्जा

जलीय ऊर्जा

- (a.) राज्य सरकार
- (b.) राज्य : राज्य
- (c.) केन्द्र सरकार

Springboard Academy

(a.) राज्य सरकार की जल ऊर्जा-

1. जाखम लघु जल ऊर्जा परियोजनाएँ - प्रतापगढ़.
   उत्पादन क्षमता- 5.4 मेगावाट

२. अनास जल विद्युत परियोजना - बांसवाड़ा
   उत्पादन क्षमता - 140 मेगावाट

3. इंदिरा गाँधी लघु जल विद्युत परियोजना - श्री गंगानगर, बीकानेर
   उत्पादन क्षमता - २3.85 मेगावाट

(b.) राज्य: राज्य सहयोग की जल विद्युत परियोजनाएँ-

- **भाखड़ा-नांगल जल विद्युत परियोजनाएँ-**
  - लाभान्वित राज्य - राजस्थान, पंजाब, हरियाणा
  - उत्पादन क्षमता - 1493 मेगावाट
  - राजस्थान की हिस्सेदारी - 15.२ प्रतिशत (२२7 Mw)

- **व्यास जल विद्युत परियोजना-**
  - राज्य- राजस्थान + पंजाब
  - राजस्थान का हिस्सा - ५२२ Mw

प्रमुख बांध
- → पौंग बांध (H.P) - 59%
- → पंडोह बांध (H.P) - २0%

- **माही- बजाज सागर जल विद्युत परियोजना-**
  - लाभान्वित राज्य - राजस्थान और गुजरात (45:55)
  - यह परियोजना दो चरणों में निर्मित है।

प्रथम चरण (1986) → २ x २5 मेगावाट = 50 मेगावाट

द्वितीय चरण (1989) → २ X 45 मेगावाट = 90 मेगावाट

<u>NOTE</u>:- इस परियोजना में उत्पादित 100% ऊर्जा राजस्थान के आदिवासी क्षेत्र में वितरित कि जाती है। (140 Mw)

- **चम्बल जल विद्युत परियोजना-**

राजस्थान और M.P की संयुक्त परियोजना
→ दोनों राज्यों का योगदान (50 : 50)

इस परियोजना में तीन बांधों से कुल 386 मेगावाट जल विद्युत उत्पादन है-

I चरण - गाँधी सागर
→ 23 मेगावाट x 5
(115 मेगावाट)

II चरण - राणा प्रताप सागर
→ 43 मेगावाट x 4
(172 मेगावाट)

III चरण - जवाहर सागर
→ 33 मेगावाट x 3
(99 मेगावाट)

→ कुल = 386 मेगावाट (राजस्थान - 193 MW : मध्यप्रदेश - 193 MW)

- **राहुघाट परियोजना - करौली**
  - → चम्बल नदी पर स्थित परियोजना।
  - → राजस्थान + मध्यप्रदेश की संयुक्त परियोजना (50 : 50)
  - → उत्पादन क्षमता - 79 मेगावाट

(C) केन्द्र सरकार की जल विद्युत परियोजनाएँ-

- **सलाल परियोजना - (जम्मू और कश्मीर)**
  - → चिनाब नदी पर
  - → NHPC (राष्ट्रीय जल विद्युत निगम) द्वारा संचालित है।
  - → जम्मू और कश्मीर, राजस्थान, U.P, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली H.P और चंडीगढ़ को इस परियोजना से लाभ मिलता है।

- **दुलहस्ती परियोजना - (जम्मू और कश्मीर)**
  - → NHPC द्वारा संचालित है।

- चिनाब नदी पर
- जम्मू और कश्मीर, राजस्थान, U.P, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तराखण्ड और चंडीगढ़ को इस परियोजना से लाभ मिलता है।

- **उरी परियोजना (जम्मू और कश्मीर)**
  - झेलम नदी पर
  - NHPC द्वारा संचालित है।
  - जम्मू और कश्मीर, राजस्थान, U.P, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, H.P, उत्तराखण्ड और चंडीगढ़ को इस परियोजना से लाभ मिलता है।

- **पार्वती परियोजना - (हिमाचल प्रदेश)**
  - पार्वती नदी पर।
  - NHPC द्वारा संचालित है।

- **चमेरा परियोजना - (हिमाचल प्रदेश)**
  - रावी नदी पर (NHPC द्वारा संचालित)

- **नाथपा झाकरी परियोजना (हिमाचल प्रदेश)**
  - सतलज नदी पर (NHPC द्वारा संचालित)

- **टिहरी परियोजना - (उत्तराखण्ड)**
  - यह परियोजना टिहरी जल विद्युत विकास निगम लिमिटेड द्वारा भागीरथी एवं भीलांगना नदी पर संचालित है।

- **टनकपुर परियोजना - (उत्तराखण्ड)**
  - NHPC द्वारा शारदा (काली) नदी पर संचालित।

- **धौलीगंगा परियोजना-(उत्तराखण्ड)**
  ↳ इस परियोजना NHPC द्वारा धौली गंगा नदी पर संचालित है।

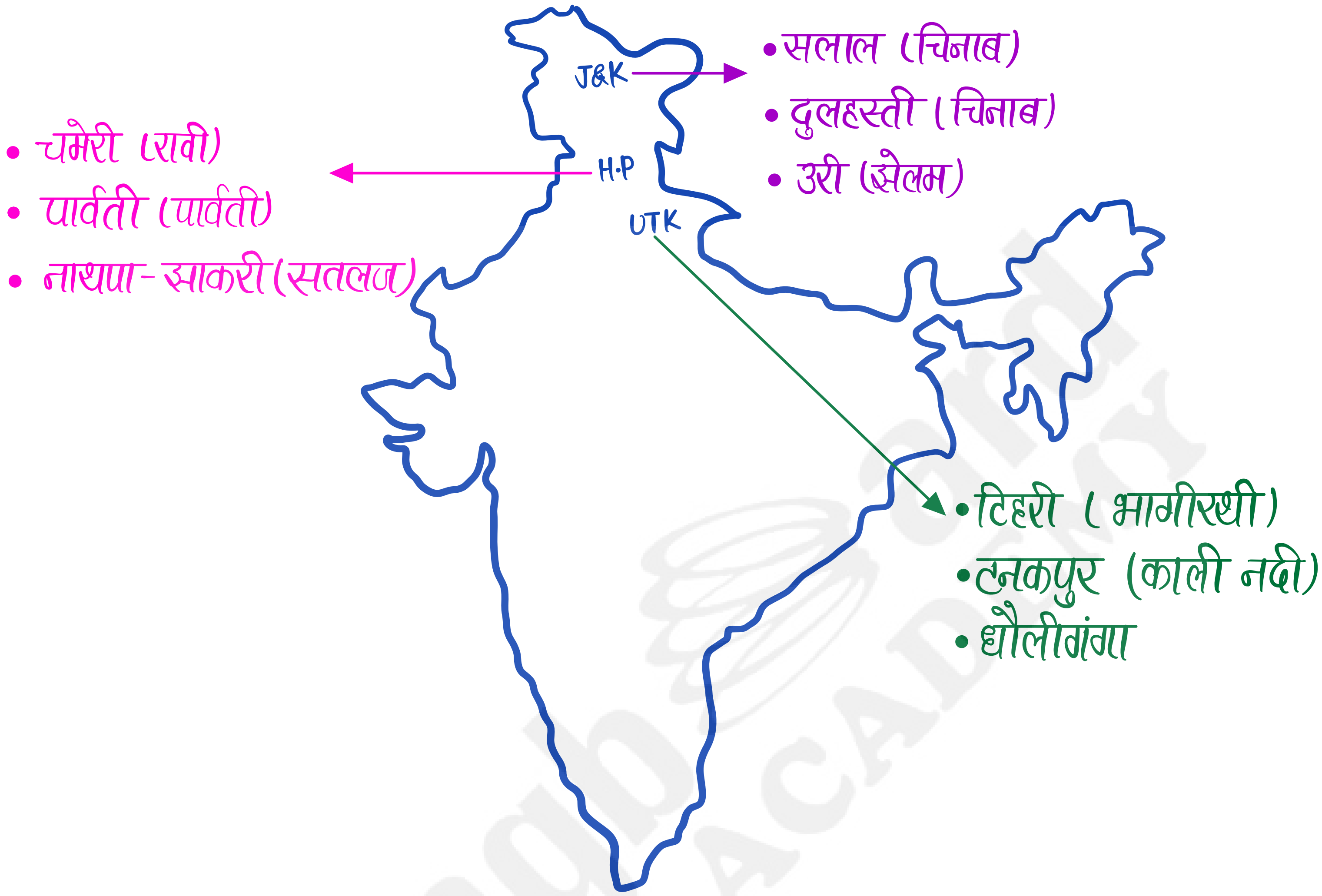

NOTE :- टिहरी (भागीरथी) THPC द्वारा संचालित है अन्य सभी परियोजनाएं NHPC द्वारा संचालित है।

निष्कर्ष- जल विद्युत परियोजनाओं में अधिक विकास एवं नियोजन की आवश्यकता है ताकि ऊर्जा उत्पादन को बढ़ाकर राजस्थान में ऊर्जा सुरक्षा को सुनिश्चित करना।

तापीय ऊर्जा- (राजस्थान राज्य की ताप विद्युत परियोजनाएँ-)

इस ऊर्जा का मुख्य स्त्रोत कोयला, पेट्रोलियम, एवं प्राकृतिक गैस है।

थर्मल/तापीय परियोजनाओं में विद्युत उत्पादन में कोयले का योगदान सर्वाधिक है।

A. कोयला/ लिग्नाइट आधारित परियोजनाएँ

- (a) राज्य सरकार की योजनाएँ
- (b) राज्य : राज्य की योजना
- (c) केन्द्र सरकार की योजना

(a) राज्य सरकार की योजनाएँ-

1. सूरतगढ़ सुपर क्रिटिकल थर्मल पावर प्लांट - श्री गंगानगर

सूरतगढ़ थर्मल प्लांट से पाँच चरणों में 8 इकाईयों से कुल २८२० MW ऊर्जा उत्पादित होती है।

जिसमें-

चरण	इकाईयाँ	उत्पादन क्षमता
I	Unit-1st	२50 MW
	Unit-२nd	२50 MW
II	Unit-3rd	२50 MW
	Unit-4th	२50 MW
III	Unit-5	२50 MW
IV	Unit-6	२50 MW
V	Unit-7	660 MW
	Unit-8	660 MW

यह राजस्थान का पहला सुपर थर्मल (२००२) पावर प्लांट है। जो वर्तमान (२०२५) में राजस्थान की सबसे बड़ी ताप विद्युत परियोजना है।

२. कोटा सुपर थर्मल पावर प्लांट -

- यह राजस्थान का पहला (1983) थर्मल (कोयला) पावर प्लांट है।
- राजस्थान की प्रथम ताप विद्युत परियोजना है जबकि दूसरी सुपर ताप विद्युत परियोजना है।

Springboard ACADEMY

- कोटा थर्मल प्लांट से पाँच चरणों में 7 इकाईयों से कुल १२४० MW ऊर्जा उत्पादित होती है।

जिसमें-

चरण	इकाईयाँ	उत्पादन क्षमता
I	Unit-1st	110 MW
	Unit-2nd	110 MW
II	Unit-3rd	२10 MW
	Unit-4th	२10 MW
III	Unit-5	२10 MW
IV	Unit-6	195 MW
V	Unit-7	195 MW

३. छबड़ा सुपर क्रिटिकल पावर प्लांट- बारां

उत्पादन क्षमता – २३२० मेगावाट

यह राजस्थान की प्रथम क्रिटिकल ताप विद्युत परियोजना है।

चरण	इकाईयाँ	उत्पादन क्षमता
I	Unit-1st	२50 MW
	Unit-2nd	२50 MW
II	Unit-3rd	२50 MW
	Unit-4th	२50 MW
III	Unit-5	660 MW
	Unit-6	660 MW

४. कवाई सुपर क्रिटिकल पावर प्लांट- बारां

- उत्पादन क्षमता - १३२० मेगावाट
- सहयोग - अडानी ग्रुप

चरण	इकाईयाँ	उत्पादन क्षमता
I	Unit-1st	660 MW
	Unit-2nd	660 MW

Springboard ACADEMY

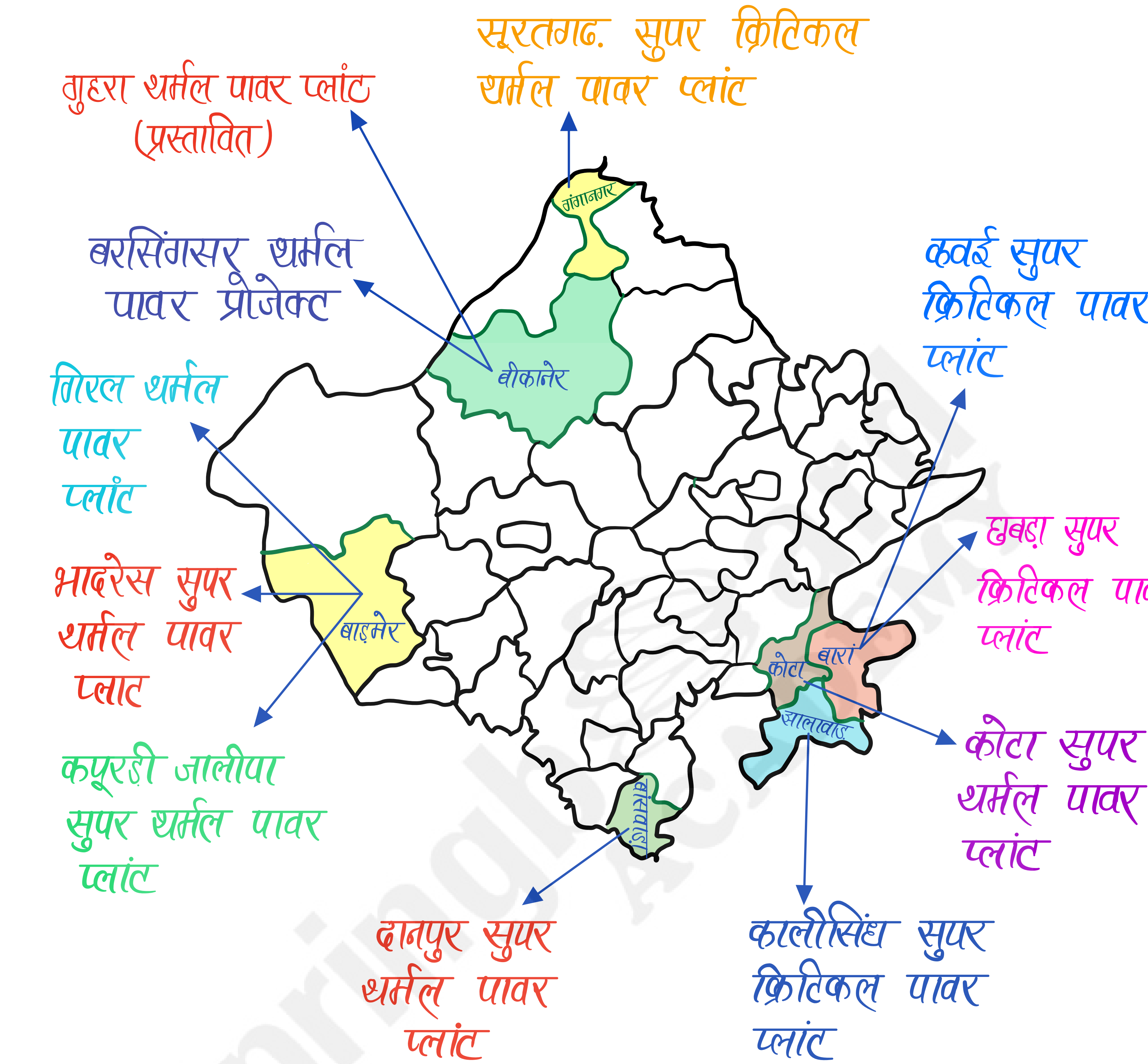

5. **काली सिंध क्रिटिकल पावर प्लांट-** झालावाड़

उत्पादन क्षमता- 1200 मेगावाट

प्रस्तावित - 800 मेगावाट (अल्ट्रा पॉवर प्रोजेक्ट)

6. **भादरेस सुपर पावर प्लांट-** बाड़मेर

➤ उत्पादन क्षमता - 1080 मेगावाट

7. कपूरड़ी - जालीपा सुपर थर्मल पावर प्लांट - बाड़मेर

- उत्पादन क्षमता - 1080 मेगावाट

8. गिरल थर्मल पावर प्लांट - थुम्बली गाँव, बाड़मेर

- उत्पादन क्षमता - २50 MW
- सहयोग - जर्मनी

9. छाबड़ा सुपर थर्मल पावर प्रोजेक्ट - बांसवाड़ा

- उत्पादन क्षमता = 1600 मेगावाट

10. बरसिंगसर थर्मल पावर प्रोजेक्ट - बीकानेर

- उत्पादन क्षमता = २50 MW (125 MW × २ Unit)
- यह नेवेली लिग्नाइट कॉर्पोरेशन (भारत सरकार) द्वारा संचालित है।

11. गुढ़ा थर्मल पावर प्लांट (प्रस्तावित) - बीकानेर

(b) राज्य : राज्य की योजना -

1. सतपुड़ा तापीय विद्युत परियोजना -

- स्थिति - जिला बैतूल, मध्यप्रदेश
- लाभान्वित राज्य = राजस्थान + मध्यप्रदेश

Springboard ACADEMY

(c) केन्द्र सरकार की परियोजना-

योजना	स्थान	स्वामित्व
✓ सिंगरोली थर्मल प्लांट	U.P	NTPC
✓ रिहंद सुपर थर्मल पावर प्लांट	U.P	NTPC
✓ ऊंचाहार सुपर थर्मल पावर प्लांट	U.P	NTPC
✓ कहल गांव सुपर थर्मल पावर प्लांट	बिहार	NTPC
✓ तलचर सुपर थर्मल पावर प्लांट	ओडिशा	NTPC

गैस विद्युत परियोजना

(a) राज्य सरकार की परियोजनाएँ

(b) केन्द्र सरकार की परियोजनाएँ

a. राज्य सरकार की परियोजनाएँ–

गैस विद्युत परियोजना	स्थिति	उत्पादन क्षमता
1. रामगढ़ (1996)	जैसलमेर	२70.5 MW
२. कम्बाईंड साईकिल	धौलपुर	330 MW
3. झामर-कोटड़ा	उदयपुर	—

NOTE :- राज्य सरकार की प्रथम गैस विद्युत परियोजना- रामगढ़ (1996) है।

(b) केन्द्र सरकार (NTPC) की गैस विद्युत परियोजनाएँ -

1. अंता
2. दादरी
3. औरैया

गैस विद्युत परियोजना	स्थिति	उत्पादन क्षमता
1. अंता (1989) (HBJ हजीरा, बिजापुर, जगदीशपुर गैस पाइप लाइन)	बारां	419.3 MW
2. दादरी	U.P	829.78 MW
3. औरैया	U.P	652 MW

NOTE - • राजस्थान में प्रथम (1989) गैस विद्युत परियोजना जो NTPC (केन्द्र सरकार) द्वारा संचालित → अंता गैस पावर प्लांट

नेफ्था / तरल ईंधन आधारित परियोजनाएँ -

1. धौलपुर पावर प्लांट -
   - 1st चरण = 330 मेगावाट
   - IInd चरण = 372.7 मेगावाट
   - कुल = 702.7 मेगावाट

2. केशोरायपाटन थर्मल पावर प्लांट - बूँदी

B. गैर परम्परागत ऊर्जा

1. परमाणु ऊर्जा - (स्रोत - यूरेनियम व थोरियम)

- राजस्थान परमाणु या आण्विक ऊर्जा स्टेशन - रावतभाटा (चित्तौड़)
- शुरुआत - दिसम्बर, 1973 (सहयोग - कनाडा)
- संचालन - नाभिकीय ऊर्जा निगम (NPCIL)

Springboard Academy

- इस संयत्र की 6 इकाइयों की स्थापित कुल क्षमता 1180 मेगावाट है।

इकाई	उत्पादन
• प्रथम इकाई	100 मेगावाट
• द्वितीय इकाई	२०० मेगावाट
• तृतीय इकाई	२२० मेगावाट
• चतुर्थ इकाई	२२० मेगावाट
• पंचम इकाई	२२० मेगावाट
• छठी इकाई	२२० मेगावाट
कुल क्षमता	1180 मेगावाट − 100 MW (Ist Unit) = 1080 मेगावाट

NOTE – वर्तमान में प्रथम इकाई को पूर्णतः बंद कर दिया गया है।

- रावतभाटा परमाणु विद्युत गृह में 700 MW की दो यूनिट प्रस्तावित है। जिसमें प्रथम यूनिट (700 MW) सितम्बर २०२५ में स्थापित की गई।

- राजस्थान को रावतभाटा (राजस्थान) व नरौरा (उ.प्र.) से परमाणु ऊर्जा प्राप्त होती है।

- राजस्थान में दूसरा परमाणु ऊर्जा विद्युत गृह – बाँसवाड़ा (प्रस्तावित)
700 MW × 4 यूनिट = २८00 MW

२. सौर ऊर्जा-

सौर ऊर्जा की सर्वाधिक संभावना

- भारत → राजस्थान में
- राजस्थान → जोधपुर में

Springboard Academy

राजस्थान में सौर ऊर्जा की सर्वाधिक सम्भावना के कारण निम्नलिखित है–

- सौर विकिरण की तीव्रता अधिक होना।
- राज्य में एक वर्ष में लगभग 325 स्पष्ट धूप के दिन होते है।
- निवेशक सौर ऊर्जा परियोजनाओं में अधिक निवेश करते है।
- मरुस्थलीय विस्तार अधिक होने के कारण उच्च तापमान की प्राप्ति।

NOTE- राजस्थान में नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय, भारत सरकार के आंकलन के अनुसार सौर स्रोतों से 142 गीगावाट (1,42,000 मेगावाट) सौर ऊर्जा प्राप्त करने की क्षमता है।

राजस्थान में सौर ऊर्जा विकास के लिए किये जा रहे प्रयास–

1. सोलर पार्क निर्माण योजना-

➤ इस योजना हेतु राजस्थान के जोधपुर, बाड़मेर, जैसलमेर, बीकानेर को चुना गया है।

➤ 2010 में क्लिंटन फाउंडेशन और राज्य सरकार के मध्य समझौते के तहत क्लिंटन फाउंडेशन सौर पार्क के विकास हेतु आवश्यक सहायता प्रदान करेगा।

राजस्थान में स्थापित सोलर पार्क

- भड़ला (जोधपुर)
- नादिया कला (जोधपुर)
- धूड़सर (जैसलमेर)
- पोकरण सौलर पार्क (जैसलमेर)
- फलौदी-पोकरण सोलर पार्क (जोधपुर-जैसलमेर)
- फतेहगढ़ सोलर पार्क (जैसलमेर)
- नोख सोलर पार्क (जैसलमेर)
- पूगल सोलर पार्क (बीकानेर)

Springboard Academy

भड़ला सौलर पार्क-

- स्थित - जोधपुर में
- भड़ला में २२४५ मेगावाट का सोलर पार्क चार चरणों में विकसित किया गया है।
- भड़ला सौलर पार्क फेज —

चरण	उत्पादन	सहयोग
Ist	65 मेगावाट	राजस्थान सोलर पार्क डवलपमेंट कंपनी लिमिटेड
IInd	680 मेगावाट	(राजस्थान सोलर पार्क डवलपमेंट कंपनी लिमिटेड)
IIIrd	1000 मेगावाट	IL & FS + राज्य सरकार
IVth	500 मेगावाट	मेसर्स अडानी + राज्य सरकार

* राजस्थान की पहली निजी क्षेत्र की सौर परियोजना रिलायंस द्वारा खींवसर (नागौर) में शुरु की गई.

२. सोलर सिटी का निर्माण-

- जिन शहरों में सौर ऊर्जा की क्षमता सर्वाधिक है, उन्हें सोलर सिटी के रूप में विकसित किया जायेगा।
- इसमें जयपुर, जोधपुर व अजमेर को शामिल किया जायेगा
- प्रस्तावित जिले - पुष्कर (अजमेर), जैसलमेर

3. SEEZ- (Solar Energy Enterprises Zone/सौर ऊर्जा उपक्रम जॉन)

- राजस्थान में सर्वाधिक सौर ऊर्जा की सम्भावना वाला क्षेत्र SEEZ कहलाता है।
- इसमें सम्मिलित क्षेत्र- जोधपुर, बाड़मेर, जैसलमेर है।

4. सौर ऊर्जा मिशन-

सौर ऊर्जा के विकास के लिए देश में जवाहर लाल नेहरू राष्ट्रीय सोलर मिशन शुरू किया गया था।

- शुरुआत- जनवरी, 2010 से
- लक्ष्य= 2022 तक 1 लाख मेगावाट (100 गीगावाट) सौर ऊर्जा उत्पादन
- यह मिशन तीन चरणों में चलाया जायेगा.

तीन चरण
- प्रथम चरण (2010-13)
- द्वितीय चरण (2013-17)
- तृतीय चरण (2017-22)

6. सौर ऊर्जा नीति-

राजस्थान में
- प्रथम सौर ऊर्जा नीति - 2011
- द्वितीय सौर ऊर्जा नीति - 2014
- नवीनतम सौर ऊर्जा नीति - 18 dec. 2019

सौर ऊर्जा नीति
- सौर ऊर्जा नीति
- लक्ष्य
- दृष्टि एवं उद्देश्य
- नोडल एजेंसी

★ सौर ऊर्जा नीति-

- इस नीति को सौर ऊर्जा नीति 2019 के नाम से जाना जाता है।
- लागू → 18 dec 2019

Springboard ACADEMY

↳ लक्ष्य → 1. २०२५-२६ तक ३०,००० मेगावाट सौर ऊर्जा परियोजनाओं का लक्ष्य हासिल करना।

2. सौर ऊर्जा के उत्पादन क्षेत्र में भावी निवेशकों के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करना।

3. राष्ट्रीय स्तर पर ऊर्जा सुरक्षा प्राप्त करना।

4. जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों का सामना करने जैसे लक्ष्यों को पूरा करना।

(i) सोलर पार्क → 24,000 MW

(ii) डिस्कॉम → 4000 MW

(iii) सोलर रूफटॉप → 1000 MW

(iv) सोलर पम्प → 1000 MW

3. **पवन ऊर्जा-** नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय, भारत सरकार के नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ विण्ड एनर्जी द्वारा 150 मी. ऊँचाई पर किए गये अध्ययन के अनुसार, राजस्थान में पवन ऊर्जा की उत्पादन क्षमता लगभग = २8५ गीगावाट है।

नोट:- राजस्थान में जैसलमेर में पवन ऊर्जा की सम्भावना सर्वाधिक है।

मुख्य पवन ऊर्जा संयंत्र –

- अमर सागर → जैसलमेर (राजस्थान में 1st)
- सोढा बाँधन → जैसलमेर
- पोहरा → जैसलमेर
- आकल → जैसलमेर
- हंसुआ → जैसलमेर

- देवगढ़ → प्रतापगढ़ (राजस्थान में 2nd)
- बीठड़ी → फलोदी (राजस्थान में 3rd)
- हर्ष विंड एनर्जी → सीकर
- बड़ा बाग → जैसलमेर
- हाईब्रिड विंड एनर्जी प्लांट → जैसलमेर

नोट :-

1. मेसर्स कालानी इंडस्ट्रीज, ने बड़ा बाग (जैसलमेर) में निजी क्षेत्र की प्रथम पवन ऊर्जा परियोजना की स्थापना की है।

राजस्थान में

- सबसे बड़ा विंड एनर्जी पार्क → "बड़ा बाग" (जैसलमेर)
- रेलवे का पहला पवन ऊर्जा संयंत्र → कोडियासर (जैसलमेर)
- पवन ऊर्जा में सर्वाधिक योगदान → सुजलॉन एनर्जी

पवन ऊर्जा नीति

- पवन ऊर्जा नीति
- लक्ष्य
- दृष्टि एवं उद्देश्य
- नोडल एजेंसी

पवन ऊर्जा-

इस नीति को राजस्थान पवन एवं हाईब्रिड ऊर्जा नीति - 2019 के नाम से जाना जायेगा।

- लागू → 18 dec. 2019 को।
- लक्ष्य → 2024-25 तक 3500 मेगावाट पवन एवं हाइब्रिड ऊर्जा परियोजनाओं का लक्ष्य हासिल करना है।

Springboard ACADEMY

1. Hybridization of existing Wind/Solar plants → 200MW
2. New Wind-Solar Hybrid project → 2000MW
3. Wind-Solar Hybrid With Storage System → 500MW
4. Hybridization of existing Conventional Plants → 800MW

- **दृष्टि एवं उद्देश्य-**

  - पवन ऊर्जा परियोजनाओं और आवश्यक भण्डारण प्रणालियों को बढ़ावा देना।
  - पवन ऊर्जा परियोजनाओं को बढ़ावा देना।
  - अक्षय ऊर्जा एकीकरण के लिए राज्य में ट्रांसमिशन एवं वितरण नेटवर्क को मजबूत करना।
  - पवन संसाधन आंकलन को बढ़ावा देना।
  - पवन ऊर्जा उपकरणों के निर्माण सम्बन्धित उद्योगों को बढ़ावा देना।
  - भूमि संसाधनों और पारेषण प्रणालियों के इष्टतम उपयोग के साथ ग्रिड सुरक्षा और स्थिरता की चुनौतियों का सामना करने के लिए पवन और सौर प्रौद्योगिकियों का हाइब्रिडाइजेशन।

सौर ऊर्जा व पवन ऊर्जा के लिए राजस्थान रिन्यूबल एनर्जी कॉरपोरेशन नोडल एजेंसी के रूप में निम्नलिखित कार्य करेगा-

- परियोजनाओं का पंजीकरण
- परियोजनाओं की स्वीकृति
- पवन पार्कों/ सौर पार्कों का विकास
- सरकारी भूमि के आवंटन की सुविधा।

Springboard Academy

4. बायोमास ऊर्जा-

- राजस्थान में बायोमास ऊर्जा के मुख्य स्त्रोत सरसों का तेल, विलायती बबूल, चावल की भूसी है।
- बायोमास ऊर्जा की सर्वाधिक सम्भावनाएँ श्री गंगानगर जिले में है।

प्रमुख बायोमास ऊर्जा संयंत्र :-

बायोमास संयंत्र	स्थान
पदमपुर →	श्री गंगानगर
खातोली →	उनियारा (टोंक)
रंगपुर →	कोटा
चंदेरिया →	चित्तौडगढ़
संगरिया →	हनुमानगढ़
कचेला - बागसरी →	सांचौर

* राजस्थान में प्रथम बायोमास एनर्जी प्लांट - पदमपुर (श्री गंगानगर)

5. बायो गैस ऊर्जा-

- स्त्रोत - गाय का गोबर
- सर्वाधिक सम्भावना = उदयपुर में

बायोगैस का रासायनिक संगठन-

मिथेन = 65 %
CO_2 = 30 %
हाइड्रोजन = 5 %

C. ऊर्जा संबंधित संस्थान -

1. राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम - (RREC)

- उद्देश्य - राज्य में गैर-परम्परागत ऊर्जा स्रोतों का विकास और संरक्षण करना।
- स्थापना - 9 Aug. 2002
- राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम की स्थापना REDA + RSPCL को मिलाकर की गई है।

REDA →	Rajasthan Energy Development Agency : 1985
RSPCL →	Rajasthan State Power Corporation Ltd : 1995

NOTE :- RSDCL → Rajasthan Solarpark Development Company

- स्थापना - 2 Nov. 2011 (जयपुर)
- यह राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम की सहयोगी कम्पनी है।

2. राजस्थान राज्य विद्युत उत्पादन निगम - जयपुर
3. राजस्थान राज्य विद्युत प्रसारण निगम - जयपुर
4. राजस्थान राज्य विद्युत वितरण निगम - जयपुर
5. राजस्थान राज्य विद्युत वितरण निगम - अजमेर
6. राजस्थान राज्य विद्युत वितरण निगम - जोधपुर

7. ऊर्जा संबंधित प्रमुख योजनाएँ

1. उज्ज्वल डिस्कॉम एश्योरेंस योजना- (उदय योजना)

- शुरुआत = 5 नवम्बर, 2015 (भारत सरकार के ऊर्जा मंत्रालय द्वारा)
- इस योजना के तहत भारत सरकार ने 27 जनवरी 2016 को राज्य सरकार और प्रत्येक डिस्कॉम के साथ त्रिकोणीय MoU पर हस्ताक्षर किए।
- इस योजना का मुख्य उद्देश्य विभिन्न कम्पनियों (डिस्कॉम) की वित्तीय स्थिति को सुधारना।

2. सौभाग्य योजना (PM सहज हर घर बिजली योजना) — 25 sep. 2017

- उद्देश्य - देश के हर घर में बिजली पहुँचाना। (लक्ष्य वर्ष - 31 मार्च, 2019)

3. कुसुम योजना (KUSUM - किसान ऊर्जा सुरक्षा एवं उत्थान महाभियान योजना)

प्रारम्भ - 8 मार्च, 2019

लक्ष्य ऊर्जा - 30800 मेगावाट

उद्देश्य - (i) सौलर पंपों को स्थापित कर ग्रिड से जोड़ना।
(ii) किसानों को ऊर्जा सुरक्षा प्रदान करना।

(a.) कुसुम घटक - ए —

- स्थापना - 0.5 MW से 2 MW क्षमता तक के विकेन्द्रीकृत सौर ऊर्जा संयंत्र
- स्थान - 33/11 किलोवाट सबस्टेशनों के 5 किमी. की परिधि में स्थित किसानों की बंजर भूमि पर
- संचालन - राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम

Springboard ACADEMY

(b.) कुसुम घटक - बी :- 7.5 H.P. तक की क्षमता वाले कृषि पम्प सेटों को सौर ऊर्जाकृत हेतु 12,500 पम्प सेटों का लक्ष्य रखा गया है।

(c.) कुसुम घटक - सी :- (फीडर लेबल सोलराइजेशन)

↳ लक्ष्य- 2,00,000 पम्प सेटों का सॉलराइजेशन

↳ किसान/भूमि मालिकों और डवलपर्स के सहयोग और आवश्यक भूमि की व्यवस्था करने के लिए सौर कृषि आजीविका योजना (SKAY) पोर्टल (www.skayrajasthan.org.in)

4. मुख्यमंत्री किसान मित्र ऊर्जा योजना-

- शुरुआत- 17 जुलाई, 2021।
- उद्देश्य- कृषि उपभोक्ता को 1000 ₹/माह, 1-वर्ष में अधिकतम 12000 ₹ का अनुदान।
- जून, 2023 से इसे **मुख्यमंत्री निः शुल्क बिजली योजना (कृषि अनुदान)** में मिला दिया गया है।

जिसके तहत वर्तमान में (कृषि उपभोक्ताओं को) —
- → 2000 यूनिट प्रतिमाह मुफ्त बिजली
- → 2000 यूनिट प्रतिमाह से अधिक होने पर मुख्यमंत्री किसान मित्र ऊर्जा योजना के तहत उस माह विशेष में 1000₹ सब्सिडी

5. मुख्यमंत्री निः शुल्क बिजली योजना (घरेलू अनुदान)-

लाभ प्रारम्भ- June, 2023

विद्युत उपभोग	रियायत
• 100 यूनिट तक	मुफ्त बिजली
• 200 यूनिट तक	पहले 100 यूनिट के विद्युत शुल्क, फिक्स चार्ज और नगरीय उपकर के बिल में छूट
• 200 यूनिट से अधिक	पहली 100 यूनिट मुफ्त लेकिन अन्य शुल्क उपभोक्ता को वहन करने होंगे।

6. PM सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना-

- शुरुआत- 13 फरवरी 2024
- बजट - 75,000 करोड़ ₹
- उद्देश्य -(i) हर महीने 300 यूनिट मुफ्त बिजली उपलब्ध करवाने के लिए एक करोड़ घरों पर सौर संयंत्र स्थापित करना।

(ii) इस योजना में अनुदान -

1 से 2 KW	₹ 30,000 से 60,000
3 KW	78,000 (अधिकतम)

लक्ष्य - राजस्थान सरकार ने 5 लाख घरों में सोलर रूफटॉप संयंत्र लगाने का लक्ष्य रखा है।

E. अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु

1. राजस्थान में ऊर्जा सम्बन्धित नीतियाँ-

- **सौर ऊर्जा नीतियाँ**
  - 1st - 2011
  - 2nd - 2014
  - 3rd - 18 dec. 2019
- **पवन ऊर्जा नीतियाँ**
  - 2012
  - 18 dec. 2019
- **अक्षय ऊर्जा नीतियाँ**
  - 6 अक्टूबर, 2023
  - अक्षय ऊर्जा नीति का 2029-30 तक ऊर्जा लक्ष्य-
    - सौर = 65,000 MW
    - विंड & हाइब्रिड = 15,000 MW
    - हाइड्रो/जल, पम्प स्टोरेज प्लांट = 10,000 MW
    - कुल लक्ष्य = 90,000 MW
- **बायोमास नीतियाँ**
  - 2010
  - 2023 → बायोमास वेस्ट टू एनर्जी नीति, 2023 (29 सितम्बर, 2023)
- **राजस्थान ग्रीन हाइड्रोजन नीति**
  - 29 सितम्बर, 20

Springboard ACADEMY

राजस्थान ग्रीन हाइड्रोजन नीति

- २९ सितम्बर, २०२३
- ३१ मार्च, २०३० तक / नई नीति तक
- २०३० तक राज्य में २००० KTPA का लक्ष्य (KTPA = Kilo tones Per Annum)

Note :- अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत सरकार २०३० तक 500 GW नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन के लक्ष्य के लिए प्रतिबद्ध है।

२. राजस्थान में वर्तमान में ऊर्जा–

अधिष्ठापित क्षमता (Installed capacity) – २4783.64 MW (मार्च, २०२4)

जिसमें मुख्य उत्पादन–
- तापीय ऊर्जा = 12,000 MW (लगभग) -(60-70%)
- पवन ऊर्जा = 4359.63 (50-60%)
- सौर ऊर्जा = 4010.50 MW
- हाइड्रो / जलीय ऊर्जा = 3,000 MW (लगभग)
- परमाणु ऊर्जा = 456.74 MW
- बायोमास ऊर्जा = 109.95 MW

राजस्थान में मार्च, २०२4 तक कुल विद्युतीकरण गाँव = 43,965

राजस्थान की कुल स्थापित विद्युत क्षमता में–

परम्परागत ऊर्जा योगदान	अक्षय / नवीकरणीय ऊर्जा योगदान
78 – 79 %	२1 – २२ %

Springboard ACADEMY

NOTE:- नवीकरणीय (अक्षय) ऊर्जा में सर्वाधिक वार्षिक वृद्धि २०२३ में- राजस्थान (प्रथम)

3. ऊर्जा संबंधित महत्वपूर्ण दिवस-

- २० अगस्त → अक्षय ऊर्जा दिवस
- 14 दिसम्बर → राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस
- अर्थ आवर डे →
  - यह मार्च के किसी भी शनिवार को सायः 8:30-9:30 तक मनाया जाता है।
  - इस दिन आवश्यक उपकरण को छोड़कर अन्य सभी उपकरण बन्द करने की अपील की जाती है।
  - यह पर्यावरण संरक्षण और ऊर्जा की बचत का सन्देश देने के लिए ऑस्ट्रेलिया से शुरू किया गया था जिसमें भारत २००१ में शामिल हुआ।

Springboard Academy

जनसंख्या

जनगणना का इतिहास-

- ✓ प्राचीन काल → अर्थशास्त्र = चाणक्य (मौर्य काल)
- ✓ मध्य काल → "आइने-अकबरी" = अबुल फ़ज़ल (मुगल काल)
- ✓ आधुनिक काल → 1872 ई. लॉर्ड मेयो द्वारा आधुनिक जनगणना की शुरुआत।

NOTE:-

- 1981 में लॉर्ड रिपन के काल में व्यवस्थित और दशकीय जनगणना की शुरुआत हुई।
- जनगणना संघ सूची का विषय है।
- जनगणना संविधान की सातवीं अनुसूची में शामिल है।
- जनसंख्या जनगणना अधिनियम - 1948 में पारित।
- राष्ट्रीय जनसंख्या आयोग - 11 मई, 2000
- जनगणना गृह मंत्रालय के जनगणना विभाग द्वारा करवाई जाती है।

जनगणना - 2011

- क्रमानुसार → 15th
- दशकीय/व्यवस्थित → 14th
- स्वतंत्रता के बाद → 7th
- 21वीं शताब्दी → 2nd

➤ 15वीं जनगणना बजट - 2200 करोड़

Springboard ACADEMY

- प्रति व्यक्ति लागत - 18.19 ₹
- 2011 की जनगणना में शामिल कुल जिले - 640 (राजस्थान - 33 जिले)
- जनगणना शुभंकर - प्रगणक शिक्षिका
- जनगणना आदर्श वाक्य - "हमारी जनगणना, हमारा भविष्य"

विशेष बिन्दु-

- राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर पहली बार बनाया गया है।
- प्रथम बार घरों की गणना
- किन्नरों को इस जनगणना में पहली बार शामिल किया गया।
- प्रथम पेपरलेस जनगणना।
- जातीय जनगणना दूसरी बार 2011 में की गई। (प्रथम बार- 1931)

2011 की जनगणना दो चरणों में सम्पन्न हुई-

- पहला चरण - 15 मई से 30 जून, 2010
- दूसरा चरण - 9 फरवरी - 28 फरवरी, 2011

1. कुल जनसंख्या-

भारत की कुल जनसंख्या - 121.085 करोड़

राजस्थान की कुल जनसंख्या - **6.85 करोड़**

(पुरुष - 51.86% एवं महिलाएँ - 48.14%)

(अधिकतम)
- जयपुर - 66.26 लाख
- जोधपुर - 36.87 लाख

(न्यूनतम)
- जैसलमेर - 6.69 लाख
- प्रतापगढ़ - 8.67 लाख

Springboard ACADEMY

अलवर - 36.75 लाख

नागौर - 33.07 लाख

उदयपुर - 30.68 लाख

सिरोही - 10.36 लाख

बूँदी - 11.10 लाख

राजसमंद - 11.56 लाख

- राजस्थान में भारत की कुल जनसंख्या का 5.67 प्रतिशत और विश्व की कुल जनसंख्या का लगभग 1% हिस्सा है।
- 2011 के अनुसार, जनसंख्या की दृष्टि से 8 वां स्थान रखता है जबकि वर्तमान में भारत में 7 वां स्थान (आन्ध्रप्रदेश के विभाजन के कारण) रखता है।
- शिशु जनसंख्या (0-6 वर्ष) → राजस्थान की कुल जनसंख्या का 15.54 % है।

2. कुल जनसंख्या वृद्धि दर-

किसी निश्चित स्थान पर निश्चित समय में (10 वर्ष) प्रति 100 व्यक्तियों पर होने वाली वृद्धि, 'जनसंख्या वृद्धि दर' कहलाती है।

जनसंख्या वृद्धि दर

सर्वाधिक

1. बाड़मेर – 32.5 प्रतिशत
2. जैसलमेर – 31.8 प्रतिशत
3. जोधपुर – 27.7 प्रतिशत
4. बांसवाड़ा – 26.58 प्रतिशत

न्यूनतम

1. श्री गंगानगर - 10 प्रतिशत
2. झुंझुनूं – 11.7 प्रतिशत
3. पाली – 11.9 प्रतिशत
4. बून्दी – 15.4 प्रतिशत

Springboard ACADEMY

ग्रामीण (19%) व नगरीय (29%) जनसंख्या वृद्धि दर

सर्वाधिक

ग्रामीण
1. जैसलमेर
2. बाड़मेर
3. बांसवाड़ा

नगरीय
1. अलवर
2. दौसा
3. बारां

न्यूनतम

ग्रामीण
1. कोटा
2. श्री गंगानगर
3. झुंझुनूं

नगरीय
1. डूंगरपुर
2. प्रतापगढ़
3. हनुमानगढ़

- राजस्थान में सर्वाधिक ऋणात्मक जनसंख्या वृद्धि दर 1911-21 (-6.29%) के दशक में रही।
  इसे "जनसंख्या विभाजक दशक" भी कहते है।

★ **राजस्थान में 1911-21, के दशक में जनसंख्या घटने के कारण-**

1. प्लेग महामारी (मुख्य कारण)
2. प्रथम विश्व युद्ध
3. राष्ट्रीय आन्दोलनों की शुरुआत

- राजस्थान में 1951 से 1981 के दशकों को 'जनसंख्या विस्फोटक दशक' कहा जाता है। जिसमें— राजस्थान की जनसंख्या की सर्वाधिक वृद्धि दर- 1971-81 (32.97%) बढी।

- 1991-2001 में राजस्थान की जनसंख्या में सर्वाधिक वृद्धि दर्ज की गई।

- जनसंख्या वृद्धि के प्रमुख कारक- उच्च जन्म दर, न्यूनतम मृत्यु दर एवं आप्रवास।

Springboard ACADEMY

3. जनसंख्या घनत्व-
प्रति वर्ग कि.मी. में रहने वाली जनसंख्या।

↳ 2001 में राजस्थान का जनघनत्व 165 था.

जबकि 2011 में → **जनसंख्या घनत्व - 200/वर्ग कि.मी.**

सर्वाधिक
1. जयपुर - 595
2. भरतपुर - 503
3. दौसा - 476
4. अलवर - 438

न्यूनतम
1. जैसलमेर - 17
2. बीकानेर - 78
3. बाड़मेर - 92
4. चुरू - 147

<u>100 से कम जनसंख्या घनत्व वाले जिले</u> - जैसलमेर, बीकानेर, बाड़मेर

★ मरुस्थलीय जिलों (पश्चिमी राजस्थान) में जनसंख्या घनत्व सबसे कम मिलता है।

4. लिंगानुपात-
प्रति हजार पुरुषों की संख्या पर महिलाओं की संख्या को लिंगानुपात कहा जाता है।

कुल औसत लिंगानुपात = 928

सर्वाधिक
- डूंगरपुर - 994
- राजसमंद - 990
- पाली - 987
- प्रतापगढ़ - 983

न्यूनतम
- धौलपुर - 846
- जैसलमेर - 852
- करौली - 861
- भरतपुर - 880

2001 (921) की तुलना में 2011 (928) में 7 अंकों की बढ़ोतरी हुई।

Springboard Academy

राज्य में लिंगानुपात

ग्रामीण - 933

सर्वाधिक
1. पाली - 1003
2. राजसमंद - 998
3. डूंगरपुर - 996

न्यूनतम
1. धौलपुर - 841
2. करौली - 856
3. जैसलमेर - 859

शहरी - 914

सर्वाधिक
1. टोंक - 985
2. बांसवाड़ा - 964
3. प्रतापगढ़ - 963

न्यूनतम
1. जैसलमेर - 807
2. धौलपुर - 864
3. अलवर - 872

2011 में शिशु लिंगानुपात - 888

सर्वाधिक

बांसवाड़ा - 934
प्रतापगढ़ - 933
भीलवाड़ा - 928
उदयपुर - 924

न्यूनतम

झुंझुनूं - 837
सीकर - 848
करौली - 852
श्री गंगानगर - 854

NOTE- राजस्थान में 2001 में शिशु लिंगानुपात 909 था जिसमें 2011 में (909-888) 21 अंको की कमी हुई।

राज्य में शिशु लिंगानुपात

ग्रामीण - 892

सर्वाधिक
1. बांसवाड़ा - 937
2. प्रतापगढ़ - 936
3. भीलवाड़ा - 933

न्यूनतम
1. झुंझुनूं - 832
2. सीकर - 843
3. करौली - 850

शहरी - 874

सर्वाधिक
1. नागौर - 907
2. बीकानेर - 906
3. भीलवाड़ा - 905

न्यूनतम
1. धौलपुर - 851
2. गंगानगर - 852
3. दौसा - 857

Springboard ACADEMY

NOTE :- ➤ राजस्थान के सभी जिलों में लिंगानुपात 1000 से कम है।

➤ राजस्थान का औसत लिंगानुपात (928) भारत के औसत लिंगानुपात (943) से कम है।

➤ राजस्थान में सामान्य लिंगानुपात में औसत लिंगानुपात से कम वाले जिले = 15

➤ राजस्थान में शिशु लिंगानुपात से औसत शिशु लिंगानुपात से कम वाले जिले = 12

न्यूनतम और अधिकतम लिंगानुपात के पीछे कारण

सर्वाधिक

- प्रति व्यक्ति कम आय।
- तकनीकी ज्ञान एवं सुविधा कम होना।
- कम साक्षरता दर
- संयुक्त परिवार
- दहेज प्रथा प्रचलित नहीं

न्यूनतम

- प्रति व्यक्ति अधिक आय
- तकनीकी सुविधा एवं जानकारी अधिक होना।
- उच्च साक्षरता दर
- एकल परिवार
- दहेज प्रथा का प्रचलन

5. साक्षरता - "6 वर्ष से अधिक आयु का व्यक्ति जो किसी भी भाषा को पढ़ने या लिखने में सक्षम हो उसे 'साक्षर' कहा जाता है।"

2011 में साक्षरता दर - 66.1 प्रतिशत

2001 में साक्षरता दर = 60.41 %

सर्वाधिक

- कोटा - 76.6 %
- जयपुर - 75.5 %
- झुंझनुं - 74.1 %
- सीकर - 71.9 %

न्यूनतम

- जालौर - 54.9 %
- सिरोही - 55.3 %
- प्रतापगढ़ - 56.0 %
- बांसवाड़ा - 56.3 %

Springboard Academy

राजस्थान में पुरुष साक्षरता दर= 79.2%

सर्वाधिक

1. झुन्झुनूं = 86.9%
2. कोटा = 86.3%
3. जयपुर = 86.1%
4. सीकर = 85.1%

न्यूनतम

1. प्रतापगढ़ = 69.5%
2. बांसवाड़ा = 69.5%
3. सिरोही = 70.0%
4. जालौर = 70.7%

राजस्थान में महिला साक्षरता दर= 52.1%

सर्वाधिक

1. कोटा 65.9%
2. जयपुर 64.0%
3. झुंझुनूं 61.0%
4. गंगानगर 59.7%

न्यूनतम

1. जालौर 38.5%
2. जैसलमेर 39.7%
3. सिरोही 39.7%
4. बाड़मेर 40.6%

ग्रामीण एवं शहरी साक्षरता

ग्रामीण 61.4 प्रतिशत

- पुरुष 76.2%
- महिला 45.8%

शहरी 79.7 प्रतिशत

- पुरुष 87.9%
- महिला 70.7%

Springboard Academy

	सर्वाधिक	न्यूनतम
ग्रामीण साक्षरता	झुंझुनूं	सिरोही
ग्रामीण पुरुष साक्षरता	झुंझुनूं	सिरोही
ग्रामीण महिला साक्षरता	झुंझुनूं	सिरोही

	सर्वाधिक	न्यूनतम
शहरी साक्षरता	उदयपुर	नागौर
शहरी पुरुष साक्षरता	उदयपुर	धौलपुर
शहरी महिला साक्षरता	उदयपुर	जालौर

- बाड़मेर और चुरु में साक्षरता दर में कमी आई है, शेष सभी ने साक्षरता दर में वृद्धि हुई है।
- देश में पुरुष और महिला साक्षरता दर के बीच का अन्तर सर्वाधिक है।
- राजस्थान में औसत साक्षरता (66.1%) से कम साक्षरता वाले जिले = 19

6. ग्रामीण एवं शहरी जनसंख्या -

ग्रामीण एवं शहरी जनसंख्या

- ग्रामीण 5.15 करोड़
  - सर्वाधिक
    1. जयपुर
    2. अलवर
    3. नागौर
    4. उदयपुर
  - न्यूनतम
    1. जैसलमेर
    2. कोटा
    3. प्रतापगढ़
    4. सिरोही
- शहरी 1.70 करोड़
  - सर्वाधिक
    1. जयपुर
    2. जोधपुर
    3. कोटा
    4. अजमेर
  - न्यूनतम
    1. प्रतापगढ़
    2. डूंगरपुर
    3. जैसलमेर
    4. बांसवाड़ा

Springboard Academy

ग्रामीण एवं शहरी जनसंख्या

- ग्रामीण 75.1 प्रतिशत
  - सर्वाधिक प्रतिशत (डूंगरपुर)
  - न्यूनतम प्रतिशत (कोटा)
- शहरी २५.९ प्रतिशत
  - सर्वाधिक प्रतिशत (कोटा)
  - न्यूनतम प्रतिशत (डूंगरपुर)

राजस्थान के अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति–

अनुसूचित जनजाति (13.5%)

(कुल जनसंख्या = (92.38 लाख)

ST लिंगानुपात 958

सर्वाधिक जनसंख्या

1. उदयपुर
2. बांसवाड़ा
3. डूँगरपुर

न्यूनतम जनसंख्या

1. बीकानेर
2. नागौर
3. चुरु

सर्वाधिक प्रतिशत

1. बांसवाड़ा
2. डूँगरपुर
3. प्रतापगढ़

न्यूनतम प्रतिशत

1. नागौर
2. बीकानेर
3. चुरु

↳ ST २४% से अधिक = 5 जिलों में (बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, सिरोही, उदयपुर)

↳ ST 50% या 60% से अधिक = 3 जिले (बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़)

अनुसूचित जाति (17.8 %)

(कुल जनसंख्या = (१२२.२१ %)

SC लिंगानुपात — ९२३

सर्वाधिक जनसंख्या
1. जयपुर
2. गंगानगर
3. नागौर

न्यूनतम जनसंख्या
1. डूँगरपुर
2. प्रतापगढ़
3. बांसवाड़ा

सर्वाधिक प्रतिशत
1. गंगानगर
2. हनुमानगढ़
3. करौली

न्यूनतम प्रतिशत
1. डूँगरपुर
2. बांसवाड़ा
3. उदयपुर

- SC, २५% से अधिक = २ जिले (श्री गंगानगर, हनुमानगढ़)
- २०% से अधिक = १२ जिले

8. राजस्थान में विभिन्न धर्मों की जनसंख्या–

धर्म	प्रतिशत	सर्वाधिक जनसंख्या	सर्वाधिक प्रतिशत
हिन्दु	88.49	जयपुर	दौसा
मुस्लिम	9.07	जयपुर	जैसलमेर
सिक्ख	1.27	श्री गंगानगर	श्री गंगानगर
जैन	0.91	जयपुर	उदयपुर
ईसाई	0.14	बांसवाड़ा	बांसवाड़ा
बौद्ध	0.02	अलवर	अलवर

NOTE-
- राजस्थान राज्य की जनसंख्या नीति - २० जनवरी, २०००
- राष्ट्रीय जनसंख्या नीति - 15 फरवरी, २०००

Springboard Academy

राष्ट्रीय जनसंख्या नीति के उद्देश्य

तात्कालिक

गर्भ निरोधक एवं स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध करवाना।

मध्यकालिक

2010 तक TFR (कुल प्रजनन दर) को 2.1 तक लाना।

दीर्घकालिक

2045 तक स्थिर जनसंख्या के लक्ष्य को प्राप्त करना।

Springboard ACADEMY